अध्याय १३

जगदानन्द पण्डित तथा रघुनाथ भट्ट गोस्वामी के साथ लीलाएँ

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में तेरहवें अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। यह सोचकर कि चैतन्य महाप्रभु को केले की छाल पर सोने में असुविधा होती होगी, जगदानन्द ने उनके लिए एक तकिया तथा रजाई बनवा दी। किन्तु महाप्रभु ने इन्हें स्वीकार नहीं किया। इसके बाद स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने केले के पत्ते के महीन रेशों से दूसरा तकिया तथा रजाई बनवाई, जिन्हें महाप्रभु ने प्रबल विरोध के बाद स्वीकार किया। श्री चैतन्य महाप्रभु की अनुमति से जगदानन्द पण्डित वृन्दावन गये, जहाँ उन्होंने सनातन गोस्वामी से भक्ति विषयक अनेक विचार-विमर्श किये। मुकुन्द सरस्वती के वस्त्र के विषय में भी चर्चा चली। जब जगदानन्द पण्डित जगन्नाथ पुरी लौटे, तो उन्होंने महाप्रभु को सनातन गोस्वामी के कुछ उपहार दिये और तब *पीलु* फल की घटना घटी।

एक बार श्री चैतन्य महाप्रभु किसी देवदासी के गीत सुनकर भावावेश में आ गये। यह न जानते हुए कि कौन गा रहा है, महाप्रभु कँटीली झाड़ियों के रास्ते से होकर उसकी ओर दौड़े, किन्तु जब गोविन्द ने उन्हें बतलाया कि कोई स्त्री गा रही है, तो वे तुरन्त रुक गये। इस घटना से श्री चैतन्य महाप्रभु ने हर एक को यह उपदेश दिया कि संन्यासियों तथा वैष्णवों को स्त्रियों का गाना नहीं सुनना चाहिए।

जब रघुनाथ भट्ट गोस्वामी अपनी शिक्षा पूरी करके वाराणसी से जगन्नाथपुरी के लिए चल पड़े, तब उनकी भेंट रामदास विश्वास पण्डित से हुई। विश्वास पण्डित को अपनी शिक्षा का अत्यधिक गर्व था। उसके निर्विशेषवादी होने के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसका ठीक से स्वागत नहीं किया। इस अध्याय के अन्त में रघुनाथ भट्ट गोस्वामी के जीवन चरित का सारांश दिया गया है।

कृष्ण-विच्छेद-जातार्त्या क्षीणे चापि मनस्तनू ।
दधाते फुल्लतां भावैर्यस्य तं गौरमाश्रये ॥ १॥

कृष्ण-विच्छेद-जातार्त्या क्षीणे चापि मनस्तनू ।
दधाते फुल्लतां भावैर्यस्य तं गौरमाश्रये ॥ १॥

कृष्ण-विच्छेद—कृष्ण से विरह के कारण; **जात**—उत्पन्न हुआ; **आर्त्या**—पीड़ा के कारण; **क्षीणे**—क्षीण; **च**—और; **अपि**—यद्यपि; **मनः**—मन; **तनू**—तथा शरीर; **दधाते**—हो गया; **फुल्लताम्**—प्रफुल्लित हो उठना; **भावैः**—प्रेमावेश से; **ग्रस्य**—जिनका; **तम्**—उनको; **गौरम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आश्रये**—मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

अनुवाद

मैं गौरचन्द्र महाप्रभु के चरणकमलों की शरण ग्रहण करता हूँ। कृष्ण-विरह की पीड़ा के कारण उनका मन क्षीण हो गया और शरीर अत्यन्त दुबला हो गया। किन्तु जब उन्हें भगवान् का प्रेमावेश होता, तो वे पुनः पूरी तरह प्रफुल्लित हो उठते।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय हो; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो! तथा महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

हेन-मते महाप्रभु जगदानन्द-सङ्गे ।
नाना-मते आस्वादय प्रेमेर तरङ्गे ॥ ३ ॥

हेन-मते—इस तरह; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जगदानन्द-सङ्गे**—जगदानन्द पण्डित के संग में; **नाना-मते**—नाना प्रकार से; **आस्वादय**—आस्वादन; **प्रेमेर तरङ्गे**—दिव्य प्रेम सम्बन्धों का।

अनुवाद

इस तरह जगदानन्द पण्डित के संग में श्री चैतन्य महाप्रभु नाना प्रकार के शुद्ध प्रेम-सम्बन्धों का आस्वादन करते।

कृष्ण-विच्छेदे दुःखे क्षीण मन-काय ।
भावावेशे प्रभु कभु प्रफुल्लित हय ॥ ४ ॥

कृष्ण-विच्छेदे—कृष्ण के विरह के कारण; **दुःखे**—दुःख में; **क्षीण**—क्षीण; **मन-काय**—मन और शरीर; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कभु**—कभी-कभी; **प्रफुल्लित हय**—प्रफुल्लित तथा स्वस्थ हो जाते।

अनुवाद

कृष्ण के विरह के दुःख से महाप्रभु का मन क्षीण हो गया और शरीर दुर्बल पड़ गया, किन्तु जब उन्हें भावावेश होता, तब वे पुनः प्रफुल्लित तथा स्वस्थ हो जाते।

कलार शरलाते, शयन, अति क्षीण काय ।
शरलाते हाड़ लागे, व्यथा हय गाय ॥ ५ ॥

कलार शरलाते, शयन, अति क्षीण काय ।
शरलाते हाड़ लागे, व्यथा हय गाय ॥५॥

कलार शरलाते—केले की शुष्क छाल पर; **शयन**—शयन करते; **अति**—अति; **क्षीण काय**—क्षीण शरीर; **शरलाते**—केले की शुष्क छाल पर; **हाड़ लागे**—हड्डियों में; **व्यथा**—पीड़ा होती; **हय**—है; **गाय**—शरीर में।

अनुवाद

चूँकि वे अत्यन्त दुर्बल थे, अतएव जब वे केले की शुष्क छाल पर शयन करते, तो उससे उनकी हड्डियों में पीड़ा होती थी।

দেখি' সব ভক্ত-গণ মহা-দুঃখ পায় ।
সহিতে নারে জগদানন্দ, সৃজিলা উপায় ॥৬॥

देखि' सब भक्त-गण महा-दुख पाय ।
सहिते नारे जगदानन्द, सृजिला उपाय ॥६॥

देखि'—देखकर; **सब भक्त-गण**—सारे भक्त; **महा-दुःख**—अत्यन्त दुःखी; **पाय**—हो गये; **सहिते**—सहन; **नारे**—न कर पाते; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **सृजिला उपाय**—युक्ति निकाली।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को पीड़ा में देखकर सारे भक्त अत्यन्त दुःखी होते। वे इसे सहन न कर पाते। तब जगदानन्द पण्डित ने एक युक्ति निकाली।

সূক্ষ্ম বস্ত্র আনি' গৌরিক দিয়া রাঙ্গাইলা ।
শিমুলীর তূলা দিয়া তাহা পূরাইলা ॥৭॥

सूक्ष्म वस्त्र आनि' गौरिक दिया राङ्गाइला ।
शिमुलीर तूला दिया ताहा पूराइला ॥७॥

सूक्ष्म वस्त्र—महीन वस्त्र; **आनि'**—ले आये; **गौरिक**—गेरू से रँग; **दिया**—दिया; **राङ्गाइला**—रंग दिया; **शिमुलीर**—सेमल की; **तूला**—रुई; **दिया**—साथ; **ताहा**—उसमें; **पूराइला**—भर दी।

अनुवाद

वे कुछ महीन वस्त्र ले आये और उसे गेरू से रँग दिया। फिर उसके भीतर सेमल की रुई भर दी।

এক তূলী-বালিস গোবিন্দের হাতে দিলা ।
'প্রভুরে শোয়াইহ ইহায়'—তাহারে কহিলা ॥৮॥

এক তূলী-বালিস গোবিন্দের হাতে দিলা ।
'প্রভুরে শোয়াইহ ইহায়'—তাহারে কহিলা ॥৮॥

एक—एक; **तूली-बालिस**—रजाई और तकिया; **गोविन्देर**—गोविन्द के; **हाते**—हाथों; **दिला**—दे दिया; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शोयाइह**—लेटने को; **इहाय**—इसी पर; **ताहारे**—उनको; **कहिला**—कहना।

अनुवाद

इस तरह उन्होंने एक रजाई तथा तकिया बनवा दिया और फिर यह कहते हुए उसे गोविन्द को दे दिया, "महाप्रभु को इसी पर लेटने को कहना।"

স্বরূপ-গোসাঞিকে কহে জগদানন্দ ।
'আজি আপনে যাঞা প্রভুরে করাইহ শয়ন' ॥৯॥

স্বরূপ-গোসাঞিকে কহে জগদানন্দ ।
'আজি আপনে য়াঞা প্রভুরে করাইহ শয়ন' ॥৯॥

स्वरूप-गोसाञिके—स्वरूप दामोदर गोस्वामी से; **कहे**—कहा; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **आजि**—आज; **आपने**—आप स्वयं; **य़ाञा**—जाकर; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कराइह शयन**—शय्या पर लेटने का आग्रह करें।

अनुवाद

जगदानन्द ने स्वरूप दामोदर गोस्वामी से कहा, "आज आप स्वयं श्री चैतन्य महाप्रभु से शय्या पर लेटने के लिए आग्रह करें।"

শয়নের কালে স্বরূপ তাহাঙি রহিলা ।
তূলী-বালিস দেখি' প্রভু ক্রোধাবিষ্ট হ-ইলা ॥১০॥

शयनेर काले स्वरूप ताहाङि रहिला ।
तूली-बालिस देखि' प्रभु क्रोधाविष्ट ह-इला ॥ १० ॥

शयनेर काले—सोने के समय; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **ताहाङि रहिला**—पास की रुके; **तूली**—रजाई; **बालिस**—तकिया; **देखि'**—देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **क्रोध-आविष्ट ह-इला**—बहुत क्रोधित हो उठे।

अनुवाद

जब महाप्रभु के सोने का समय हुआ, तो स्वरूप दामोदर पास ही रुके रहे, किन्तु जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने रजाई तथा तकिया देखा, तो वे तुरन्त अत्यधिक क्रोधित हो उठे।

गोविन्देरे पुछेन,—'इहा कराइल कोन्जन?' ।
जगदानन्देर नाम शुनि' सङ्कोच हैल मन ॥ ११ ॥
गोविन्देरे पुछेन,—'इहा कराइल कोन् जन?' ।
जगदानन्देर नाम शुनि' सङ्कोच हैल मन ॥ ११ ॥

गोविन्देरे पुछेन—गोविन्द से पूछा; **इहा**—इसे; **कराइल**—बनवाया; **कोन् जन**—किसने; **जगदानन्देर**—जगदानन्द पण्डित का; **नाम**—नाम; **शुनि'**—सनुकर; **सङ्कोच**—भयभीत; **हैल**—हो गये; **मन**—मन में।

अनुवाद

महाप्रभु ने गोविन्द से पूछा, "इसे किसने बनवाया?" जब गोविन्द ने जगदानन्द पण्डित का नाम लिया तो श्री चैतन्य महाप्रभु कुछ-कुछ भयभीत हो उठे।

गोविन्देरे कहि' सेइ तूलि दूर कैला ।
कलार शरला-उपर शयन करिला ॥ १२ ॥
गोविन्देरे कहि' सेइ तूलि दूर कैला ।
कलार शरला-उपर शयन करिला ॥ १२ ॥

गोविन्देरे कहि'—गोविन्द से कहा; **सेइ तूलि**—वह रजाई; **दूर कैला**—दूर करो; **कलार**—केले की; **शरला-उपर**—शुष्क छाल पर; **शयन करिला**—लेट गये।

अनुवाद

गोविन्द से रजाई तथा तकिया हटाने के लिए कहकर महाप्रभु केले की शुष्क छाल पर लेट गये।

स्वरूप कहे,—'तोमार इच्छा, कि कहिते पारि? ।
शय्या उपेक्षिले पण्डित दुःख पावे भारी' ॥ १३॥

स्वरूप कहे,—'तोमार इच्छा, कि कहिते पारि? ।
शय्या उपेक्षिले पण्डित दुःख पाबे भारी' ॥ १३॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने कहा; **तोमार इच्छा**—आपकी इच्छा; **कि**—कौन; **कहिते पारि**—कह सकता है; **शय्या उपेक्षिले**—यदि आप यह बिस्तर स्वीकार नहीं करते; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **दुःख**—दुःखी; **पाबे**—होगा; **भारी**—अत्यधिक।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने महाप्रभु से कहा, "हे प्रभु, मैं आपकी परम इच्छा का खंडन नहीं कर सकता, किन्तु यदि आप यह बिस्तर स्वीकार नहीं करते, तो जगदानन्द पण्डित को अत्यधिक दुःख होगा।"

प्रभु कहेन,—"खाट एक आनह पाड़িते ।
जगदानन्द चाहे आमाय विषय भुञ्जाइते ॥ १४॥

प्रभु कहेन,—"खाट एक आनह पाड़िते ।
जगदानन्द चाहे आमाय विषय भुञ्जाइते ॥ १४॥

प्रभु कहेन—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **खाट**—चारपाई; **एक**—एक; **आनह**—ले आओ; **पाड़िते**—लेटने के लिए; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **चाहे**—चाहता है; **आमाय**—मैं; **विषय भुञ्जाइते**—भौतिक सुख का भोग करूँ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "तुम मेरे लेटने के लिए एक चारपाई भी ले आओ। जगदानन्द पण्डित चाहता है कि मैं भौतिक सुख का भोग करूँ।

সন্ন্যাসী মানুষ আমার ভূমিতে শয়ন ।
আমারে খাট-তূলি-বালিস মস্তক-মুণ্ডন'' ॥ ১৫ ॥

सन्न्यासी मानुष आमार भूमिते शयन ।
आमारे खाट-तूलि-बालिस मस्तक-मुण्डन" ॥ १५ ॥

सन्न्यासी मानुष—जीवन से संन्यास लिया हुआ मनुष्य; **आमार**—मुझे; **भूमिते शयन**—भूमि पर लेटना; **आमारे**—मुझे; **खाट**—चारपाई; **तूलि**—रजाई; **बालिस**—तकिया; **मस्तक-मुण्डन**—अत्यन्त लज्जास्पद।

अनुवाद

"मैं संन्यासी हूँ, इसलिए मुझे भूमि पर लेटना चाहिए। चारपाई, रजाई या तकिया का प्रयोग करना मेरे लिए अत्यन्त लज्जास्पद होगा।"

স্বরূপ-গোসাঞি আসি' পণ্ডিতে কহিলা ।
শুনি' জগদানন্দ মনে মহা-দুঃখ পাইলা ॥ ১৬ ॥

स्वरूप-गोसाञि आसि' पण्डिते कहिला ।
शुनि' जगदानन्द मने महा-दुःख पाइला ॥ १६ ॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **आसि'**—लौटकर आये; **पण्डिते कहिला**—जगदानन्द पण्डित को बतलाया; **शुनि'**—सुनकर; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **मने**—मन से; **महा-दुःख पाइला**—अतीव दुःख हुआ।

अनुवाद

जब स्वरूप दामोदर लौटकर आये और जगदानन्द पण्डित को सारी घटनाएँ बतलाईं, तो उनको अतीव दुःख हुआ।

স্বরূপ-গোসাঞি তবে সৃজিলা প্রকার ।
কদলীর শুষ্ক-পত্র আনিলা অপার ॥ ১৭ ॥

स्वरूप-गोसाञि तबे सृजिला प्रकार ।
कदलीर शुष्क-पत्र आनिला अपार ॥ १७ ॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **तबे**—तब; **सृजिला प्रकार**—एक युक्ति निकाली; **कदलीर**—केले की; **शुष्क-पत्र**—सूखी पत्तियाँ; **आनिला**—लाये; **अपार**—पर्याप्त मात्रा में।

अनुवाद

तब स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने एक अन्य युक्ति निकाली। उन्होंने पहले पर्याप्त मात्रा में केले की सूखी पत्तियाँ प्राप्त कीं।

নখে চিরি' চিরি' তাহা অতি সূক্ষ্ম কৈলা ।
প্রভুর বহির্বাস দুইতে সে সব ভরিলা ॥১৮॥

नखे चिरि' चिरि' ताहा अति सूक्ष्म कैला ।
प्रभुर बहिर्वास दुइते से सब भरिला ॥१८॥

नखे—नाखूनों से; **चिरि' चिरि'**—चीर चीरकर; **ताहा**—इनको; **अति**—अत्यन्त; **सूक्ष्म**—महीन; **कैला**—बनाया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **बहिर्वास**—बाह्य वस्त्रों; **दुइते**—दो; **से सब**—से सबको; **भरिला**—भर दिया।

अनुवाद

तब उन्होंने अपने नाखूनों से इन पत्तियों को अत्यन्त महीन रेशों में चीर लिया और श्री चैतन्य महाप्रभु के दो बाह्य वस्त्रों (उत्तरीय) को इन रेशों से भर दिया।

এই-মত দুই কৈলা ওড়ন-পাড়নে ।
অঙ্গীকার কৈলা প্রভু অনেক যতনে ॥১৯॥

एइ-मत दुइ कैला ओड़न-पाड़ने ।
अङ्गीकार कैला प्रभु अनेक यतने ॥१९॥

एइ-मत—इस तरह; **दुइ**—दोनों; **कैला**—बना दिया; **ओड़न-पाड़ने**—एक बिस्तर के लिए, एक तकिये के लिए; **अङ्गीकार कैला**—स्वीकार किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अनेक यतने**—काफी प्रयास के बाद।

अनुवाद

इस तरह स्वरूप दामोदर ने बिस्तर तथा तकिया बना दिया और भक्तों के काफी प्रयास के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें स्वीकार कर लिया।

তাতে শয়ন করেন প্রভু,—দেখি' সবে সুখী ।
জগদানন্দ—ভিতরে ক্রোধ বাহিরে মহা-দুঃখী ॥২০॥

ताते शयन करेन प्रभु,—देखि' सबे सुखी ।
जगदानन्द—भितरे क्रोध बाहिरे महा-दुःखी ॥ २०॥

ताते—उस पर; **शयन करेन**—लेटने पर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देखि'**—देखकर; **सबे सुखी**—सारे लोग सुखी थे; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **भितरे**—अपने मन में; **क्रोध**—क्रोधित; **बाहिरे**—बाहर से; **महा-दुःखी**—अत्यन्त दुःखी।

अनुवाद

सारे लोग महाप्रभु को उस शय्या पर लेटते देखकर सुखी थे, किन्तु जगदानन्द भीतर से नाराज थे और बाहर से अत्यन्त दुःखी लग रहे थे।

पूर्वे जगदानन्देर इच्छा वृन्दावन याइते ।
प्रभु आज्ञा ना देन ताँरे, ना पारे चलिते ॥ २१॥
पूर्वे जगदानन्देर इच्छा वृन्दावन याइते ।
प्रभु आज्ञा ना देन ताँरे, ना पारे चलिते ॥ २१॥

पूर्वे—पहले; **जगदानन्देर**—जगदानन्द पण्डित को; **इच्छा**—इच्छा; **वृन्दावन याइते**—वृन्दावन जाने की; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आज्ञा**—अनुमति; **ना देन**—नहीं दी; **ताँरे**—उनको; **ना पारे चलिते**—वे नहीं जा पाये।

अनुवाद

पहले जब जगदानन्द पण्डित वृन्दावन जाना चाहते थे, तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें अनुमति नहीं दी थी, अतएव वे जा नहीं पाये थे।

भितरेर क्रोध-दुःख प्रकाश ना कैल ।
मथुरा याइते प्रभु-स्थाने आज्ञा मागिल ॥ २२॥
भितरेर क्रोध-दुख प्रकाश ना कैल ।
मथुरा याइते प्रभु-स्थाने आज्ञा मागिल ॥ २२॥

भितरेर—अन्दर से; **क्रोध-दुख**—क्रोध तथा दुःख; **प्रकाश ना कैल**—को छिपाते हुए; **मथुरा याइते**—मथुरा जाने के लिए; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **आज्ञा मागिल**—अनुमति माँगी।

अनुवाद

अब, अपने क्रोध तथा दुःख को छिपाते हुए जगदानन्द पण्डित ने फिर से मथुरा जाने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु से अनुमति माँगी।

প্রভু কহে,—"মথুরা যাইবা আমায় ক্রোধ করি' ।
আমায় দোষ লাগাঞা তুমি হ-ইবা ভিখারী" ॥২৩॥

प्रभु कहे,—"मथुरा ग्याइबा आमाय क्रोध करि' ।
आमाय दोष लागाञा तुमि ह-इबा भिखारी" ॥ २३ ॥

प्रभु कहे—प्रभु ने कहा; **मथुरा ग्याइबा**—आप मथुरा गये तो; **आमाय**—मुझे; **क्रोध करि'**—क्रोधित होकर; **आमाय**—मुझे; **दोष लागाञा**—दोष लगाओगे; **तुमि**—आप; **ह-इबा**—बन जाओगे; **भिखारी**—भिखारी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अत्यन्त स्नेहपूर्वक कहा, "यदि मथुरा जाते समय आप मुझ पर क्रुद्ध रहोगे, तो आप मात्र भिखारी बन जाओगे और मेरी निन्दा करोगे।"

জগদানন্দ কহে প্রভুর ধরিয়া চরণ ।
"পূর্ব হৈতে ইচ্ছা মোর যাইতে বৃন্দাবন ॥২৪॥

जगदानन्द कहे प्रभुर धरिया चरण ।
"पूर्व हैते इच्छा मोर ग्याइते वृन्दावन ॥ २४ ॥

जगदानन्द—जगदानन्द पण्डित; **कहे**—कहा; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **धरिया चरण**—चरणकमल पकड़कर; **पूर्व हैते**—दीर्घकाल से; **इच्छा**—इच्छा; **मोर**—मेरी; **ग्याइते वृन्दावन**—वृन्दावन जाने की।

अनुवाद

तब महाप्रभु के चरण पकड़कर जगदानन्द पण्डित ने कहा, "मैं दीर्घकाल से वृन्दावन जाने की इच्छा करता रहा हूँ।

প্রভু-আজ্ঞা নাহি, তাতে না পারি যাইতে ।
এবে আজ্ঞা দেহ', অবশ্য যাইমু নিশ্চিতে" ॥২৫॥

प्रभु-आज्ञा नाहि, ताते ना पारि याइते ।
एबे आज्ञा देह', अवश्य याइमु निश्चिते" ॥ २५ ॥

प्रभु-आज्ञा—प्रभु की आज्ञा; **नाहि**—नहीं; **ताते**—इसलिए; **ना पारि याइते**—मैं नहीं जा सका; **एबे**—अब; **आज्ञा**—अनुमति; **देह'**—दें; **अवश्य**—अवश्य; **याइमु**—मैं जाऊँगा; **निश्चिते**—निश्चित रूप से।

अनुवाद

"मैं आपकी आज्ञा के बिना नहीं जा सका। अब आप मुझे आज्ञा दें और मैं निश्चित रूप से वहाँ जाऊँगा।"

प्रभु प्रीते ताँर गमन ना करेन अङ्गीकार ।
तेंहो प्रभुर ठाञि आज्ञा मागे बार बार ॥ २६ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रीते**—स्नेह के कारण; **ताँर**—उनको; **गमन**—जाने देने की; **ना करेन अङ्गीकार**—अनुमति नहीं दे रहे; **तेंहो**—वे; **प्रभुर ठाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **आज्ञा**—अनुमति; **मागे**—माँगी; **बार बार**—बारम्बार।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित के प्रति स्नेह के कारण ही श्री चैतन्य महाप्रभु जाने देने की अनुमति नहीं दे रहे थे, किन्तु जगदानन्द पण्डित बारम्बार हठ कर रहे थे कि महाप्रभु जाने की अनुमति दे दें।

स्वरूप-गोसाञिरे पण्डित कैला निवेदन ।
"पूर्व हैते वृन्दावन याइते मोर मन ॥ २७ ॥

स्वरूप-गोसाञिरे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी से; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **कैला निवेदन**—निवेदन किया; **पूर्व हैते**—दीर्घकाल से; **वृन्दावन याइते**—वृन्दावन जाना; **मोर मन**—मेरा मन।

अनुवाद

तब जगदानन्दने स्वरूप दामोदर गोस्वामी से निवेदन किया, "दीर्घकाल से मैं वृन्दावन जाना चाह रहा हूँ।

প্রভু-আজ্ঞা বিনা তাহাঁ যাইতে না পারি ।
এবে আজ্ঞা না দেন মোরে, 'ক্রোধে যাহ' বলি ॥২৮॥

प्रभु-आज्ञा विना ताहाँ य्राइते ना पारि ।
एबे आज्ञा ना देन मोरे, 'क्रोधे य्राह' बलि ॥ २८ ॥

प्रभु-आज्ञा—श्री चैतन्य महाप्रभु की अनुमति के; **विना**—बिना; **ताहाँ**—वहाँ; **य्राइते**—जा; **ना पारि**—नहीं सकता; **एबे**—अब; **आज्ञा**—अनुमति; **ना देन**—नहीं दी; **मोरे**—मुझ पर; **क्रोधे**—क्रोध में; **य्राह**—तुम जा रहे हो; **बलि**—बोले।

अनुवाद

"किन्तु मैं महाप्रभु की अनुमति के बिना वहाँ नहीं जा सकता था और अब भी वे अनुमति देने से मना करते हैं। वे कहते हैं, 'तुम इसलिए जाना चाहते हो, क्योंकि तुम मुझ पर क्रुद्ध हो।'

সহজেই মোর তাহাঁ যাইতে মন হয় ।
প্রভু-আজ্ঞা লঞা দেহ', করিয়ে বিনয়'' ॥২৯॥

सहजेइ मोर ताहाँ य्राइते मन हय ।
प्रभु-आज्ञा लञा देह', करिये विनय" ॥ २९ ॥

सहेजेइ—सहज इच्छा; **मोर**—मेरा; **ताहाँ**—वहाँ; **य्राइते**—जाने का; **मन**—मन; **हय**—है; **प्रभु-आज्ञा**—श्री चैतन्य महाप्रभु की अनुमति से; **लञा देह'**—कृपा करके; **करिये विनय**—नम्रतापूर्वक निवेदन करें।

अनुवाद

"वृन्दावन जाने की मेरी सहज इच्छा है, अतएव आप उनसे अनुमति देने के लिए विनयपूर्वक अनुरोध करें।"

তবে স্বরূপ-গোসাঞি কহে প্রভুর চরণে ।
''জগদানন্দের ইচ্ছা বড় যাইতে বৃন্দাবনে ॥৩০॥

तबे स्वरूप-गोसाञि कहे प्रभुर चरणे ।
"जगदानन्देर इच्छा बड़ याइते वृन्दावने ॥ ३० ॥

तबे—उसके बाद; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **कहे**—निवेदन किया; **प्रभुर चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु की चरणकमलों में; **जगदानन्देर**—जगदानन्द पण्डित ने; **इच्छा बड़**—प्रबल इच्छा; **याइते वृन्दावने**—वृन्दावन जाने के लिए।

अनुवाद

तत्पश्चात् स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में यह निवेदन किया, "जगदानन्द पण्डित वृन्दावन जाने के लिए अत्यन्त इच्छुक हैं।

তোমার ঠাঞি আজ্ঞা তেঁহো মাগে বার বার ।
আজ্ঞা দেহ',—মথুরা দেখি' আইসে এক-বার ॥ ৩১ ॥
तोमार ठाञि आज्ञा तेंहो मागे बार बार ।
आज्ञा देह',—मथुरा देखि' आइसे एक-बार ॥ ३१ ॥

तोमार ठाञि—आपसे; **आज्ञा**—अनुमति; **तेंहो**—वे; **मागे**—माँगते हैं; **बार बार**—बारम्बार; **आज्ञा देह'**—कृपा करके अनुमति दें; **मथुरा देखि'**—मथुरा देखकर; **आइसे**—वापस आने की; **एक-बार**—एक बार।

अनुवाद

"वे बारम्बार आपसे अनुमति के लिए याचना कर रहे हैं, अतएव कृपा करके उन्हें मथुरा जाने और फिर लौट आने की आज्ञा दे दें।

আইরে দেখিতে যৈছে গৌড়-দেশে যায় ।
তৈছে এক-বার বৃন্দাবন দেখি' আয়'' ॥ ৩২ ॥
आइरे देखिते ग्रैछे गौड़-देशे याय ।
तैछे एक-बार वृन्दावन देखि' आय" ॥ ३२ ॥

आइरे—शचीमाता; **देखिते**—देखने; **ग्रैछे**—को; **गौड़-देशे**—बंगाल में; **याय**—वे गये; **तैछे**—उसी तरह; **एक-बार**—एक बार; **वृन्दावन देखि'**—वृन्दावन देखने के बाद; **आय**—वे लौट आयेंगे।

अनुवाद

"आपने उन्हें शचीमाता को मिलने बंगाल जाने की अनुमति दी थी; उसी तरह आप उन्हें वृन्दावन जाने और तब यहाँ लौट आने की अनुमति दे सकते हैं।"

স্বরূপ-গোসাঞির বোলে প্রভু আজ্ঞা দিলা ।
জগদানন্দে বোলাঞা তাঁরে শিখাইলা ॥ ৩৩ ॥

स्वरूप-गोसाञि बोले प्रभु आज्ञा दिला ।
जगदानन्दे बोलाञा ताँरे शिखाइला ॥ ३३ ॥

स्वरूप-गोसाञिर—स्वरूप दामोदर गोस्वामी के; **बोले**—अनुरोध पर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आज्ञा दिला**—अनुमति दे दी; **जगदानन्दे**—जगदानन्द पण्डित को; **बोलाञा**—बुलाया; **ताँरे**—उनको; **शिखाइला**—निर्देश दिये।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी के अनुरोध पर श्री चैतन्य महाप्रभु ने जगदानन्द पण्डित को जाने की अनुमति दे दी। महाप्रभु ने उन्हें बुलाया और इस प्रकार निर्देश दिये।

''বারাণসী পর্য্যন্ত স্বচ্ছন্দে যাইবা পথে ।
আগে সাবধানে যাইবা ক্ষত্রিয়াদি-সাথে ॥ ৩৪ ॥

"वाराणसी पर्य्यन्त स्वच्छन्दे य्राइबा पथे ।
आगे सावधाने य्राइबा क्षत्रियादि-साथे ॥ ३४ ॥

वाराणसी पर्य्यन्त—वाराणसी तक; **स्वच्छन्दे**—बिना किसी उपद्रव; **य्राइबा पथे**—आप अपने मार्ग पर जाओ; **आगे**—उसके बाद; **सावधाने**—सतर्क रहना; **य्राइबा**—आप जा सकते हो; **क्षत्रिय-आदि-साथे**—क्षत्रियों के साथ।

अनुवाद

"आप वाराणसी तक बिना किसी उपद्रव का सामना किये जा सकते हो, किन्तु वाराणसी के आगे आप क्षत्रियों के साथ मार्ग से यात्रा करते हुए सतर्क रहना।

तात्पर्य

वाराणसी से वृन्दावन तक का मार्ग लुटेरों से भरा पड़ा था, इसलिए उन दिनों यात्रियों की रक्षा करने के लिए क्षत्रिय होते थे।

केवल गौड़िया पाइले 'बाटपाड़' करि' बान्धे ।
सब लूटि' बाँधि' राखे, याइते विरोधे ॥ ३५ ॥

केवल गौड़िया पाइले 'बाटपाड़' करि' बान्धे ।
सब लुटि' बाँधि' राखे, याइते विरोधे ॥ ३५ ॥

केवल—अकेले; **गौड़िया**—बंगाली; **पाइले**—अगर मिलते हैं; **बाटपाड़**—लूटपाट; **करि'**—करते; **बान्धे**—बाँधकर; **सब**—सब कुछ; **लुटि'**—ले लेते; **बाँधि'**—बन्दी बनाकर; **राखे**—रखते; **याइते विरोधे**—जाने नहीं देते।

अनुवाद

"जैसे ही ये लुटेरे मार्ग पर किसी बंगाली को अकेले यात्रा करते देखते हैं, वे उसकी हर वस्तु ले लेते हैं, उसे बन्दी बना लेते हैं और जाने नहीं देते हैं।

तात्पर्य

सामान्यतया बंगाली लोग अधिक हृष्टपुष्ट नहीं होते। इसलिए जब कोई अकेला बंगाली यात्री बिहार से होकर गुजरता है, तो मार्ग के लुटेरे उसे बन्दी बना लेते हैं, उसका सारा सामान लूट लेते हैं और अपनी सेवा कराने के लिए उसका अपहरण करके ले जाते हैं। एक मत के अनुसार बिहार के लुटेरे भलीभाँति जानते हैं कि बंगाली बुद्धिमान होते हैं, इसलिए वे इन बंगालियों को ऐसी सेवा के लिए बाध्य करते हैं, जिसमें बुद्धि की आवश्यकता होती है और वे उन्हें जाने नहीं देते।

मथुरा गेले सनातन-सङ्गेइ रहिबा ।
मथुरार स्वामी सबेर चरण वन्दिबा ॥ ३६ ॥

मथुरा गेले सनातन-सङ्गेइ रहिबा ।
मथुरार स्वामी सबेर चरण वन्दिबा ॥ ३६ ॥

मथुरा गेले—जब तुम मथुरा जाओगे; **सनातन-सङ्गेइ**—सनातन गोस्वामी के संग; **रहिबा**—रहकर; **मथुरार स्वामी**—समस्त प्रमुख जनों के; **सबेर**—सब के; **चरण वन्दिबा**—चरणकमलों में नमस्कार करना।

अनुवाद

"तुम मथुरा पहुँचकर सनातन गोस्वामी के साथ रहना और वहाँ समस्त प्रमुख जनों के चरणकमलों में नमस्कार करना।

दूरे रहि' भक्ति करिह सङ्गे ना रहिबा ।
ताँ-सबार आचार-चेष्टा ल-इते नारिबा ॥ ३७ ॥

दूरे रहि' भक्ति करिह सङ्गे ना रहिबा ।
ताँ-सबार आचार-चेष्टा ल-इते नारिबा ॥ ३७ ॥

दूरे रहि'—दूर रहना; **भक्ति करिह**—दिखावटी भक्त; **सङ्गे**—के संग में; **ना रहिबा**—न रहना; **ताँ-सबार**—उनके; **आचार**—आचार; **चेष्टा**—चेष्टा; **ल-इते नारिबा**—नहीं अपना सकते।

अनुवाद

"मथुरा के निवासियों से आप स्वच्छन्द होकर मत मिलना-जुलना, दूर से ही उनको सम्मान प्रदर्शित करना। चूँकि आप भक्ति के भिन्न स्तर पर हो, अतएव आप उनके आचार-व्यवहार को नहीं अपना सकते।

तात्पर्य

वृन्दावन तथा मथुरा के निवासी वात्सल्य रस में कृष्ण की भक्ति करते हैं और उनके भाव स्मार्त ब्राह्मणों से सदैव विपरीत होते हैं। जो भक्त कृष्ण की ऐश्वर्य भाव में पूजा करते हैं, वे मथुरा तथा वृन्दावन के निवासियों के वात्सल्य-भक्ति भावों को नहीं समझ सकते, जो रागानुग प्रेम मार्ग का अनुसरण करने वाले हैं। *विधि मार्ग* (नियमानुसार भक्ति) के पद पर स्थित भक्त *राग मार्ग* (स्वत:स्फूर्त भक्ति) पर स्थित भक्तों के कार्यों का गलत अर्थ निकाल सकते हैं। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने जगदानन्द पण्डित को वृन्दावनवासियों से दूर रहने का उपदेश दिया, क्योंकि वे रागानुग भक्त हैं, जिससे वे उनके प्रति अनादर भाव प्रदर्शित न कर सकें।

सनातन-सङ्गे करिह वन दरशन ।
सनातनेर सङ्ग ना छाड़िबा एक-क्षण ॥ ७८ ॥

सनातन-सङ्गे करिह वन दरशन ।
सनातनेर सङ्ग ना छाड़िबा एक-क्षण ॥ ३८ ॥

सनातन-सङ्गे—सनातन गोस्वामी के साथ; **करिह**—करना; **वन दरशन**—बारहों वनों का दर्शन; **सनातनेर**—सनातन गोस्वामी के; **सङ्ग**—साथ; **ना छाड़िबा**—ना छोडना; **एक-क्षण**—एक क्षण भी।

अनुवाद

"आप सनातन गोस्वामी के साथ वृन्दावन के बारहों वनों का दर्शन करना। उनका साथ एक क्षण के लिए भी मत छोड़ना।

शीघ्र आसिह, ताहाँ ना रहिह चिर-काल ।
गोवर्धने ना चड़िह देखिते 'गोपाल' ॥ ७९ ॥

शीघ्र आसिह, ताहाँ ना रहिह चिर-काल ।
गोवर्धने ना चड़िह देखिते 'गोपाल' ॥ ३९ ॥

शीघ्र—थोड़े ही समय में; **आसिह**—लौट आना; **ताहाँ**—वहाँ; **ना रहिह**—नहीं रहना; **चिर-काल**—ज्यादा समय के लिए; **गोवर्धने**—गोवर्धन पर्वत पर; **ना चड़िह**—मत चढ़ना; **देखिते गोपाल**—गोपाल अर्चाविग्रह का दर्शन करने के लिए।

अनुवाद

"आप वृन्दावन में थोड़े ही समय तक रहना और फिर जितना जल्दी हो सके लौट आना। हाँ, और आप गोपाल अर्चाविग्रह का दर्शन करने के लिए गोवर्धन पर्वत पर मत चढ़ना।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में परामर्श दिया है कि वृन्दावन में दीर्घकाल तक रहने से अपने आपको बचाना चाहिए, क्योंकि कहावत है, "मान घटे नित घर के जाये।" यदि कोई अनेक दिनों तक वृन्दावन में रह जाता है, तो वह वहाँ के निवासियों का उचित आदर नहीं कर पाता। इसलिए जिन्होंने कृष्ण के प्रति रागानुग प्रेम उत्पन्न नहीं किया है, उन्हें दीर्घकाल

तक वृन्दावन में नहीं रहना चाहिए। अच्छा हो कि वे अल्पकालिक यात्रा करें। इसी तरह गोपाल अर्चाविग्रह का दर्शन करने के लिए गोवर्धन पर्वत पर चढ़ने से भी बचना चाहिए। चूँकि गोवर्धन पर्वत गोपाल से अभिन्न है, इसलिए पर्वत पर पाँव नहीं रखना चाहिए। जब गोपाल कहीं अन्यत्र चले जाँय, तब उनका दर्शन करना चाहिए।

आमिह आसितेछि,——कहिह सनातने ।
आमार तरे एक-स्थान येन करे वृन्दावने'' ॥ ४० ॥

आमिह आसितेछि,——कहिह सनातने ।
आमार तरे एक-स्थान ग्रेन करे वृन्दावने" ॥ ४० ॥

आमिह—मैं भी; **आसितेछि**—आ रहा हूँ; **कहिह सनातने**—सनातन गोस्वामी को सूचित करना; **आमार तरे**—मेरे लिए; **एक-स्थान**—एक स्थान; **ग्रेन**—इसलिए; **करे**—प्रबन्ध करें; **वृन्दावने**—वृन्दावन में।

अनुवाद

"सनातन गोस्वामी को सूचित करना कि मैं दूसरी बार वृन्दावन आ रहा हूँ और वह मेरे ठहरने के लिए एक स्थान का प्रबन्ध कर रखे।"

एत बलि' जगदानन्दे कैला आलिङ्गन ।
जगदानन्द चलिला प्रभुर वन्दिया चरण ॥ ४१ ॥

एत बलि' जगदानन्दे कैला आलिङ्गन ।
जगदानन्द चलिला प्रभुर वन्दिया चरण ॥ ४१ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **जगदानन्दे**—जगदानन्द पण्डित को; **कैला**—किया; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **चलिला**—चल पड़े; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **वन्दिया चरण**—चरणकमलों की वन्दना करने पर।

अनुवाद

यह कहकर महाप्रभु ने जगदानन्द पण्डित का आलिंगन किया। जगदानन्द ने भी महाप्रभु के चरणकमलों की वन्दना की और फिर वे वृन्दावन के लिए चल पड़े।

सब भक्त-गण-ठाञि आज्ञा मागिला ।
वन-पथे चलि' चलि' वाराणसी आइला ॥४२॥

सब भक्त-गण-ठाञि आज्ञा मागिला ।
वन-पथे चलि' चलि' वाराणसी आइला ॥४२॥

सब भक्त-गण-ठाञि—सारे भक्तों से; **आज्ञा मागिला**—आज्ञा माँगी; **वन-पथे चलि' चलि'**—जंगल के रास्ते से होते हुए; **वाराणसी आइला**—वाराणसी पहुँच गये।

अनुवाद

उन्होंने सारे भक्तों से आज्ञा माँगी और तब प्रस्थान किया। जंगल के रास्ते से होते हुए वे शीघ्र ही वाराणसी पहुँच गये।

तपन-मिश्र, चन्द्रशेखर,—दोंहारे मिलिला ।
ताँर ठाञि प्रभुर कथा सकल-ई शुनिला ॥४३॥

तपन-मिश्र, चन्द्रशेखर,—दोंहारे मिलिला ।
ताँर ठाञि प्रभुर कथा सकल-इ शुनिला ॥४३॥

तपन-मिश्र—तपन मिश्र; **चन्द्रशेखर**—चन्द्रशेखर; **दोंहारे मिलिला**—दोनों मिले; **ताँर ठाञि**—दोनों ने; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कथा**—लीलाएँ; **सकल-इ**—सभी; **शुनिला**—उन्होंने सुनीं।

अनुवाद

जब वे वाराणसी में तपन मिश्र तथा चन्द्रशेखर से मिले, तो उन दोनों ने उनसे श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाएँ सुनीं।

मथुराते आसि' मिलिला सनातने ।
दुइ-जनेर सङ्गे दुँहे आनन्दित मने ॥४४॥

मथुराते आसि' मिलिला सनातने ।
दुइ-जनेर सङ्गे दुँहे आनन्दित मने ॥४४॥

मथुराते आसि'—जब वे मथुरा पहुँचे; **मिलिला सनातने**—वे सनातन गोस्वामी से मिले; **दुइ-जनेर**—दोनों ने; **सङ्गे**—एक साथ; **दुँहे**—दोनों; **आनन्दित मने**—मन में अत्यन्त प्रसन्न हुए।

अनुवाद

अन्त में जगदानन्द पण्डित मथुरा पहुँचे, जहाँ वे सनातन गोस्वामी से मिले। वे एक दूसरे को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

সনাতন করাইলা তাঁরে দ্বাদশ বন দরশন ।
গোকুলে রহিলা দুঁহে দেখি' মহাবন ॥৪৫॥

सनातन कराइला ताँरे द्वादश वन दरशन ।
गोकुले रहिला दुँहे देखि' महावन ॥ ४५ ॥

सनातन—सनातन गोस्वामी; **कराइला**—किया; **ताँरे**—उनको; **द्वादश**—बारहों; **वन**—वन; **दरशन**—दर्शन; **गोकुले**—गोकुल में; **रहिला**—रहे; **दुँहे**—दोनों; **देखि'**—देखने के बाद; **महा-वन**—महावन।

अनुवाद

जब सनातन गोस्वामी जगदानन्द को वृन्दावन के बारहों वन दिखला चुके, जिनमें महावन अन्तिम था, तब वे दोनों गोकुल में रहे।

সনাতনের গোফাতে দুঁহে রহে এক-ঠাঞি ।
পণ্ডিত পাক করেন দেবালয়ে যাই' ॥৪৬॥

सनातनेर गोफाते दुँहे रहे एक-ठाञि ।
पण्डित पाक करेन देवालये याइ' ॥ ४६ ॥

सनातनेर गोफाते—सनातन गोस्वामी की गुफा में; **दुँहे**—दोनों; **रहे**—रुके; **एक-ठाञि**—एक जगह; **पण्डित**—जगदानन्द; **पाक करेन**—पकाते थे; **देवालये याइ'**—मन्दिर में जाकर।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित सनातन गोस्वामी की गुफा में रुके तो थे, किन्तु वे अपना भोजन पास के मन्दिर में जाकर पकाते।

সনাতন ভিক্ষা করেন যাই' মহাবনে ।
কভু দেবালয়ে, কভু ব্রাহ্মণ-সদনে ॥৪৭॥

सनातन भिक्षा करेन ग्राइ' महावने ।
कभु देवालये, कभु ब्राह्मण-सदने ॥ ४७ ॥

सनातन—सनातन गोस्वामी; **भिक्षा करेन**—भिक्षा माँगने; **ग्राइ' महा-वने**—महावन के आसपास जाते थे; **कभु**—कभी; **देवालये**—मन्दिर में; **कभु**—कभी; **ब्राह्मण-सदने**—ब्राह्मण के घर में।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी महावन के आसपास द्वार-द्वार जाकर भिक्षा माँगते थे। कभी वे किसी मन्दिर में जाते और कभी किसी ब्राह्मण के घर जाते।

सनातन पण्डितेर करे समाधान ।
महावने देन आनि' मागि' अन्न-पान ॥ ४८ ॥

सनातन पण्डितेर करे समाधान ।
महावने देन आनि' मागि' अन्न-पान ॥ ४८ ॥

सनातन—सनातन गोस्वामी; **पण्डितेर**—जगदानन्द पण्डित की; **करे समाधान**—सारी आवश्यकताएँ पूरी करते; **महा-वने**—महावन के पास; **देन**—देते; **आनि'**—लाते; **मागि'**—माँगते; **अन्न-पान**—खाना और पीना।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी जगदानन्द पण्डित की सारी आवश्यकताएँ पूरी करते। वे महावन के आसपास भिक्षा माँगते और जगदानन्द पण्डित के खाने-पीने की सारी वस्तुएँ ले आते।

एक-दिन सनातने पण्डित निमन्त्रिला ।
नित्य-कृत्य करि' तेँह पाक चड़ाइला ॥ ४९ ॥

एक-दिन सनातने पण्डित निमन्त्रिला ।
नित्य-कृत्य करि' तेंह पाक चड़ाइला ॥ ४९ ॥

एक-दिन—एक दिन; **सनातने**—सनातन गोस्वामी; **पण्डित निमन्त्रिला**—जगदानन्द पण्डित को निमन्त्रित किया; **नित्य-कृत्य करि'**—नित्य कर्म समाप्त करके; **तेंह**—वे; **पाक चड़ाइला**—भोजन बनाना प्रारम्भ किया।

अनुवाद

एक दिन जगदानन्द पण्डित ने सनातन को पास के मन्दिर में भोजन करने के लिए निमन्त्रित किया। नित्य कर्म समाप्त करके उन्होंने भोजन पकाना प्रारम्भ किया।

'मुकुन्द सरस्वती' नाम सन्न्यासी महाजने ।
एक बहिर्वास तेँहो दिल सनातने ॥५०॥

'मुकुन्द सरस्वती' नाम सन्न्यासी महाजने ।
एक बहिर्वास तेंहो दिल सनातने ॥५०॥

मुकुन्द सरस्वती—मुकुन्द सरस्वती; **नाम**—नामक; **सन्न्यासी**—संन्यासी; **महा-जने**—महान् संन्यासी; **एक**—एक; **बहिर्वास**—बहिर्वास; **तेंहो**—वे; **दिल**—दिया; **सनातने**—सनातन गोस्वामी को।

अनुवाद

इसके पूर्व मुकुन्द सरस्वती नामक एक महान् संन्यासी ने सनातन गोस्वामी को एक बहिर्वास (उत्तरीय) दिया था।

सनातन सेई वस्त्र मस्तके बान्धिया ।
जगदानन्देर वासा-द्वारे वसिला आसिया ॥५१॥

सनातन सेइ वस्त्र मस्तके बान्धिया ।
जगदानन्देर वासा-द्वारे वसिला आसिया ॥५१॥

सनातन—सनातन गोस्वामी; **सेइ**—वह; **वस्त्र**—वस्त्र; **मस्तके**—सिर पर; **बान्धिया**—बाँधकर; **जगदानन्देर**—जगदानन्द पण्डित के; **वासा-द्वारे**—द्वार पर; **वसिला**—बैठ गये; **आसिया**—आकर।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी इस वस्त्र को अपने सिर पर बाँधकर जगदानन्द पण्डित के द्वार पर जाकर बैठ गये।

रातुल वस्त्र देखि' पण्डित प्रेमाविष्ट ह-इला ।
'महाप्रभुर प्रसाद' जानि' ताँहारे पुछिला ॥५२॥

रातुल वस्त्र देखि' पण्डित प्रेमाविष्ट ह-इला ।
'महाप्रभुर प्रसाद' जानि' ताँहारे पुछिला ॥५२॥

रातुल—लाल; **वस्त्र**—वस्त्र; **देखि'**—देखकर; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **प्रेम-आविष्ट ह-इला**—प्रेमाविष्ट होकर; **महाप्रभुर प्रसाद**—श्री चैतन्य महाप्रभु का उपहार; **जानि'**—जानकर; **ताँहारे पुछिला**—उनसे पूछने लगे।

अनुवाद

लाल वस्त्र को श्री चैतन्य महाप्रभु का उपहार समझकर जगदानन्द पण्डित प्रेमाविष्ट हो गये। अतः उन्होंने सनातन गोस्वामी से पूछा।

"काहाँ पाइला तुमि एइ रातुल वसन?" ।
'मुकुन्द-सरस्वती' दिल,—कहे सनातन ॥५३॥
"काहाँ पाइला तुमि एइ रातुल वसन?" ।
'मुकुन्द-सरस्वती' दिल,—कहे सनातन ॥५३॥

काहाँ—कहाँ; **पाइला**—से मिला; **तुमि**—आप; **एइ**—यह; **रातुल वसन**—लाल वस्त्र; **मुकुन्द-सरस्वती दिल**—मुकुन्द सरस्वती ने दिया; **कहे सनातन**—सनातन ने उत्तर दिया।

अनुवाद

जगदानन्द ने पूछा, "सिर में बँधा हुआ यह लाल वस्त्र आपको कहाँ से मिला?" सनातन गोस्वामी ने उत्तर दिया, "इसे मुकुन्द सरस्वती ने मुझे दिया है।"

शुनि' पण्डितेर मने क्रोध उपजिल ।
भातेर हाण्डि हाते लञा मारिते आइल ॥५४॥
शुनि' पण्डितेर मने क्रोध उपजिल ।
भातेर हाण्डि हाते लञा मारिते आइल ॥५४॥

शुनि'—सुनकर; **पण्डितेर**—जगदानन्द पण्डित के; **मने**—मन में; **क्रोध**—क्रोध; **उपजिल**—उठा; **भातेर हाण्डि**—भोजन पकाने की हण्डिया; **हाते**—अपने हाथ में; **लञा**—ली; **मारिते आइल**—मारने के लिए तैयार थे।

अनुवाद

यह सुनकर जगदानन्द पण्डित तुरन्त क्रुद्ध हो उठे और सनातन

गोस्वामी को मारने के उद्देश्य से उन्होंने अपने हाथ में भोजन पकाने की हण्डिया उठा ली।

সনাতন তাঁরে জানি' লজ্জিত হ-ইলা ।
বলিতে লাগিলা পণ্ডিত হাণ্ডি চুলাতে ধরিলা ॥৫৫॥

सनातन ताँरे जानि' लज्जित ह-इला ।
बलिते लागिला पण्डित हाण्डि चुलाते धरिला ॥५५॥

सनातन—सनातन गोस्वामी; **ताँरे**—उनको; **जानि'**—जानते थे; **लज्जित ह-इला**—लज्जित हुए; **बलिते लागिला**—बोलना शुरु किया; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **हाण्डि**—भोजन बनाने की हण्डि; **चुलाते**—चूल्हे पर; **धरिला**—रखा।

अनुवाद

किन्तु सनातन गोस्वामी जगदानन्द पण्डित को अच्छी तरह जानते थे, इसलिए वे कुछ-कुछ लज्जित हुए। इसलिए जगदानन्द पण्डित ने वह हण्डिया चूल्हे पर रख दी और तब इस प्रकार कहा।

"তুমি মহাপ্রভুর হও পার্ষদ-প্রধান ।
তোমা-সম মহাপ্রভুর প্রিয় নাহি আন ॥৫৬॥

"तुमि महाप्रभुर हओ पार्षद-प्रधान ।
तोमा-सम महाप्रभुर प्रिय नाहि आन ॥५६॥

तुमि—आप; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **हओ**—है; **पार्षद-प्रधान**—पार्षद प्रधान में से एक; **तोमा-सम**—आप की तरह; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **प्रिय**—प्रिय; **नाहि**—नहीं; **आन**—और कोई।

अनुवाद

"आप तो श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रधान पार्षदों में से हैं। निस्सन्देह, उन्हें आपसे बढ़कर कोई अन्य प्रिय नहीं है।

অন্য সন্ন্যাসীর বস্ত্র তুমি ধর শিরে ।
কোনৈছে হয়,—ইহা পারে সহিবারে?" ॥৫৭॥

अन्य सन्न्यासीर वस्त्र तुमि धर शिरे ।
कोन् ऐछे हय,—इहा पारे सहिबारे?" ॥५७॥

अन्य सन्न्यासीर—दूसरे कोई संन्यासी; **वस्त्र**—वस्त्र; **तुमि**—आपने; **धर**—रखा; **शिरे**—सिर पर; **कोन्**—कौन; **ऐछे हय**—ऐसा है; **इहा**—यह; **पारे सहिबारे**—कौन सह सकता।

अनुवाद

"फिर भी आपने दूसरे संन्यासी द्वारा दिये हुए वस्त्र को अपने सिर पर बाँध लिया है। ऐसे व्यवहार को भला कौन सह सकता है?"

सनातन कहे—"साधु पण्डित-महाशय! ।
तोमा-सम चैतन्येर प्रिय केह नय ॥५८॥

सनातन कहे—"साधु पण्डित-महाशय! ।
तोमा-सम चैतन्येर प्रिय केह नय ॥५८॥

सनातन कहे—सनातन गोस्वामी ने कहा; **साधु**—संत; **पण्डित**—महान पण्डित; **महाशय**—महान्; **तोमा-सम**—आपके जैसा; **चैतन्येर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **प्रिय**—प्रिय; **केह नय**—कोई नहीं।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने कहा, "हे जगदानन्द पण्डित, आप महान् पण्डित साधु हो। आपसे बढ़कर महाप्रभु को कोई दूसरा प्रिय नहीं है।

ঐছে চৈতন্য-নিষ্ঠা যোগ্য তোমাতে ।
তুমি না দেখাইলে ইহা শিখিব কে-মতে? ॥৫৯॥

ऐछे चैतन्य-निष्ठा योग्य तोमाते ।
तुमि ना देखाइले इहा शिखिब के-मते? ॥५९॥

ऐछे—ऐसे; **चैतन्य-निष्ठा**—श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति श्रद्धा; **योग्य**—योग्यता; **तोमाते**—आप में; **तुमि ना देखाइले**—आप प्रदर्शित नहीं करोगे; **इहा**—यह; **शिखिब**—मैं सीखुंगा; **के-मते**—कैसे ।

अनुवाद

" श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति यह श्रद्धा आपको बिल्कुल शोभा देती

है। जब तक आप इसे प्रदर्शित नहीं करोगे, तो भला मैं ऐसी श्रद्धा कैसे सीख सकता हूँ?

যাহা দেখিবারে বস্ত্র মস্তকে বান্ধিল ।
সেই অপূর্ব প্রেম এই প্রত্যক্ষ দেখিল ॥ ৬০ ॥

য়াহা দেখিবারে বস্ত্র মস্তকে বান্ধিল ।
সেই অপূর্ব প্রেম এই প্রত্যক্ষ দেখিল ॥ ৬০ ॥

য়াহা—जो; **দেখিবারে**—देखने के लिए; **বস্ত্র**—वस्त्र; **মস্তকে বান্ধিল**—मैंने अपने सिर पर बाँधा; **সেই**—वह; **অপূর্ব প্রেম**—असाधारण प्रेम; **এই**—यह; **প্রত্যক্ষ**—प्रत्यक्ष; **দেখিল**—मैंने देख लिया है।

अनुवाद

"इस वस्त्र को अपने सिर पर बाँधने का उद्देश्य आज पूरा हो गया, क्योंकि मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति आपके असाधारण प्रेम को प्रत्यक्ष देख लिया है।

রক্ত-বস্ত্র 'বৈষ্ণবের' পরিতে না য়ুয়ায় ।
কোন প্রবাসীরে দিমু, কি কায় উহায়? ॥ ৬১ ॥

রক্ত-বস্ত্র 'বৈষ্ণবের' পরিতে না য়ুয়ায় ।
কোন প্রবাসীরে দিমু, কি কায় উহায়? ॥ ৬১ ॥

রক্ত-বস্ত্র—केसरिया वस्त्र; **বৈষ্ণবের**—वैष्णव के लिए; **পরিতে না য়ুয়ায়**—पहनने के लिए अनुपयुक्त; **কোন প্রবাসীরে**—अज्ञात व्यक्ति को; **দিমু**—मैं दे दूँगा; **কি**—क्या; **কায়**—व्यवहार; **উহায়**—के साथ।

अनुवाद

"यह केसरिया वस्त्र वैष्णव के पहनने के लिए अनुपयुक्त है, अतएव मेरे लिए इसका कोई उपयोग नहीं है। मैं इसे किसी अज्ञात व्यक्ति को दे दूँगा।"

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने इस घटना पर निम्न प्रकार से

टिप्पणी की है। वैष्णवजन मुक्तात्मा होते हैं और किसी भौतिक वस्तु के प्रति आसक्त नहीं होते। इसलिए वैष्णव को अपना उच्च पद सिद्ध करने के लिए संन्यासी वस्त्र स्वीकार करने की जरूरत नहीं होती। श्री चैतन्य महाप्रभु ने मायावादी संन्यासी से संन्यास ग्रहण किया था। किन्तु आज के वैष्णव संन्यासी यह कभी नहीं सोचते कि संन्यासी का वेश धारण करने से वे चैतन्य महाप्रभु के समकक्ष हो गये हैं। वस्तुत: वैष्णव अपने गुरु का नित्य दास बने रहने के लिए संन्यास ग्रहण करता है। वह यह जानते हुए संन्यास स्वीकार करता है कि वह अपने गुरु के तुल्य नहीं है, जो *परमहंस* होता है और वह अपने आपको परमहंस जैसा वेश धारण करने के योग्य नहीं समझता। इसलिए वैष्णव दीनतावश संन्यास स्वीकार करता है, किसी गर्ववश नहीं।

सनातन गोस्वामी ने परमहंस का वेश धारण कर रखा था, इसलिए उन्हें अपने सिर पर गेरुआ वस्त्र धारण करना अनुचित था। किन्तु वैष्णव संन्यासी परमहंस वैष्णव के वेश का अनुकरण करने के लिए अपने आपको उपयुक्त नहीं मानते। श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा सुनिश्चित नियमों के अनुसार (*तृणादपि सुनीचेन*) मनुष्य को अपने आपको सदैव निम्नतम अवस्था में सोचना चाहिए, परमहंस वैष्णव की अवस्था में नहीं। इसलिए कभी-कभी वैष्णव अपने आपको परमहंस वैष्णव से निचले स्तर पर रखने के लिए संन्यास आश्रम ग्रहण करता है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर का यही आदेश है।

পাক করি' জগদানন্দ চৈতন্য সমর্পিলা ।
দুই-জন বসি' তবে প্রসাদ পাইলা ॥ ৬২॥

पाक करि' जगदानन्द चैतन्ये समर्पिला ।
दुइ-जन वसि' तबे प्रसाद पाइला ॥ ६२॥

पाक करि'—भोजन बनाने के बाद; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **चैतन्य समर्पिला**—श्री चैतन्य महाप्रभु को अर्पित किया; **दुइ-जन**—दोनों; **वसि'**—बैठ गये; **तबे**—तब; **प्रसाद**—प्रसाद; **पाइला**—पा लिया।

अनुवाद

जब जगदानन्द पण्डित भोजन बना चुके, तो उन्होंने श्री चैतन्य

महाप्रभु को भोजन अर्पित किया। तब वे तथा सनातन गोस्वामी दोनों बैठ गये और प्रसाद पाने लगे।

প্রসাদ পাই অন্যোন্যে কৈলা আলিঙ্গন ।
চৈতন্য-বিরহে দুঁহে করিলা ক্রন্দন ॥ ৬৩ ॥

प्रसाद पाइ अन्योन्ये कैला आलिङ्गन ।
चैतन्य-विरहे दुँहे करिला क्रन्दन ॥ ६३ ॥

प्रसाद पाइ—प्रसाद पाने के बाद; **अन्योन्ये**—एक दूसरे का; **कैला आलिङ्गन**—आलिंगन किया; **चैतन्य-विरहे**—चैतन्य महाप्रभु से विरह के कारण; **दुँहे**—दोनों; **करिला क्रन्दन**—रोने लगे।

अनुवाद

प्रसाद पाने के बाद उन्होंने एक दूसरे का आलिंगन किया और चैतन्य महाप्रभु से विरह के कारण दोनों रोने लगे।

এই-মত মাস দুই রহিলা বৃন্দাবনে ।
চৈতন্য-বিরহ-দুঃখ না যায় সহনে ॥ ৬৪ ॥

एइ-मत मास दुइ रहिला वृन्दावने ।
चैतन्य-विरह-दुःख ना याय सहने ॥ ६४ ॥

एइ-मत—इस तरह; **मास**—महिना; **दुइ**—दो; **रहिला**—रहे; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **चैतन्य-विरह**—श्री चैतन्य महाप्रभु के विरह में; **दुःख**—दुःख; **ना याय सहने**—नहीं सह पाये।

अनुवाद

इस तरह उन्होंने वृन्दावन में दो मास बिता दिये। अन्त में वे श्री चैतन्य महाप्रभु के विरह से उत्पन्न दुःख को और अधिक नहीं सह पाये।

মহাপ্রভুর সন্দেশ কহিলা সনাতনে ।
'আমিহ আসিতেছি, রহিতে করিহ এক-স্থানে' ॥ ৬৫ ॥

महाप्रभुर सन्देश कहिला सनातने ।
'आमिह आसितेछि, रहिते करिह एक-स्थाने' ॥ ६५ ॥

महाप्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **सन्देश**—सन्देश; **कहिला**—कहा; **सनातने**—सनातन गोस्वामी को; **आमिह आसितेछि**—मैं भी आ रहा हूँ; **रहिते**—मेरे रहने के; **करिह एक-स्थाने**—स्थान की व्यवस्था करो।

अनुवाद

इसलिए जगदानन्द पण्डित ने महाप्रभु का यह सन्देश सनातन गोस्वामी को दिया, "मैं भी वृन्दावन आ रहा हूँ। कृपया मेरे ठहरने के लिए स्थान की व्यवस्था कर रखो।"

जगदानन्द-पण्डित तबे आज्ञा मागिला ।
सनातन प्रभुरे किछु भेट-वस्तु दिला ॥ ६६ ॥

जगदानन्द-पण्डित तबे आज्ञा मागिला ।
सनातन प्रभुरे किछु भेट-वस्तु दिला ॥ ६६ ॥

जगदानन्द-पण्डित—जगन्नाथ पण्डित; **तबे**—उस समय; **आज्ञा मागिला**—अनुमति माँगी; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **किछु**—कुछ; **भेट-वस्तु**—उपहार; **दिला**—दिये।

अनुवाद

जब सनातन गोस्वामी ने जगदानन्द को जगन्नाथ पुरी लौट जाने की अनुमति दे दी, तो उन्होंने महाप्रभु के लिए जगदानन्द को कुछ उपहार दिये।

रास-स्थलीर वालु आर गोवर्धनेर शिला ।
शुष्क पक्व पीलु-फल आर गुञ्जा-माला ॥ ६७ ॥

रास-स्थलीर वालु आर गोवर्धनेर शिला ।
शुष्क पक्व पीलु-फल आर गुञ्जा-माला ॥ ६७ ॥

रास-स्थलीर वालु—भगवान् कृष्ण के रासलीला स्थल की थोड़ीसी बालू; **आर**—और; **गोवर्धनेर शिला**—गोवर्धन पर्वत की एक शिला; **शुष्क**—सूखे; **पक्व**—पके हुए; **पीलु-फल**—पीलु के फल; **आर**—तथा; **गुञ्जा-माला**—घुंघचियों की माला।

अनुवाद

उपहार में रासलीला स्थल की थोड़ी-सी बालू, गोवर्धन पर्वत की एक शिला, पके हुए पीलु के सूखे फल तथा घुंघचियों की माला थी।

জগদানন্দ-পণ্ডিত চলিলা সব লঞা ।
ব্যাকুল হৈলা সনাতন তাঁরে বিদায় দিয়া ॥৬৮॥

जगदानन्द-पण्डित चलिला सब लञा ।
व्याकुल हैला सनातन ताँरे विदाय दिया ॥ ६८ ॥

जगदानन्द-पण्डित—जगदानन्द पण्डित; **चलिला**—चले; **सब**—सब; **लञा**—लेकर; **व्याकुल हैला**—व्याकुल हो गये; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **ताँरे**—उनको; **विदाय दिया**—विदा कर दिया।

अनुवाद

इस तरह ये सारे उपहार लेकर जगदानन्द पण्डित अपनी यात्रा पर चल पड़े। किन्तु विदा करने के बाद सनातन गोस्वामी अत्यन्त क्षुब्ध थे।

প্রভুর নিমিত্ত এক-স্থান মনে বিচারিল ।
দ্বাদশাদিত্য-টিলায় এক 'মঠ' পাইল ॥৬৯॥

प्रभुर निमित्त एक-स्थान मने विचारिल ।
द्वादशादित्य-टिलाय एक 'मठ' पाइल ॥ ६९ ॥

प्रभुर निमित्त—श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए; **एक-स्थान**—एक स्थान; **मने**—मन से; **विचारिल**—सोच रखा; **द्वादशादित्य-टिलाय**—ऊँचाई पर स्थित द्वादशादित्य टीला; **एक**—एक; **मठ**—मन्दिर; **पाइल**—पाया।

अनुवाद

उसके कुछ समय बाद ही सनातन गोस्वामी ने एक ऐसा स्थान चुन लिया, जहाँ वृन्दावन में अपने प्रवास के समय श्री चैतन्य महाप्रभु ठहर सकें। यह ऊँचाई पर स्थित एक मन्दिर था, जिसका नाम द्वादशादित्य टीला था।

সেই স্থান রাখিলা গোসাঞি সংস্কার করিয়া ।
মঠের আগে রাখিলা এক ছাউনি বান্ধিয়া ॥৭০॥

सेइ स्थान राखिला गोसाञि संस्कार करिया ।
मठेर आगे राखिला एक छाउनि बान्धिया ॥ ७० ॥

सेइ स्थान—उस मन्दिर को; **राखिला**—रख दिया; **गोसाञि**—सनातन गोस्वामी; **संस्कार करिया**—स्वच्छा तथा ठीक-ठाक; **मठेर आगे**—मन्दिर के सामने; **राखिला**—रखी; **एक**—एक; **छाउनि**—छोटी झोपड़ी; **बान्धिया**—बाँधकर।

अनुवाद

सनातन गोस्वामी ने उस मन्दिर को अत्यन्त स्वच्छ तथा ठीक-ठाक कराकर रख दिया। इसके सामने उन्होंने एक छोटी सी झोपड़ी बनवा दी।

शीघ्र चलि' नीलाचले गेला जगदानन्द ।
भक्त सह गोसाञि हैला परम आनन्द ॥७१॥

शीघ्र चलि' नीलाचले गेला जगदानन्द ।
भक्त सह गोसाञि हैला परम आनन्द ॥७१॥

शीघ्र—तेजी से; **चलि'**—चले; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी को; **गेला**—गये; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **भक्त सह**—उनके भक्तों के संग; **गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हैला**—हुए; **परम आनन्द**—अत्यन्त आनन्दित।

अनुवाद

तभी तेजी से यात्रा करते हुए जगदानन्द पण्डित शीघ्र ही जगन्नाथ पुरी पहुँच गये, जिससे श्री चैतन्य महाप्रभु तथा उनके भक्तों को आनन्द हुआ।

प्रभुर चरण वन्दि' सबारे मिलिला ।
महाप्रभु ताँरे दृढ़ आलिङ्गन कैला ॥७२॥

प्रभुर चरण वन्दि' सबारे मिलिला ।
महाप्रभु ताँरे दृढ़ आलिङ्गन कैला ॥७२॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरण**—चरणकमल; **वन्दि'**—वन्दना करने पर; **सबारे मिलिला**—हर एक से मिले; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको; **दृढ़**—दृढ़; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **कैला**—किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की वन्दना करने के बाद जगदानन्द पण्डित हर एक से मिले। तब महाप्रभु ने जगदानन्द का गाढ़ आलिंगन किया।

সনাতনের নামে পণ্ডিত দণ্ডবৎকৈলা ।
রাস-স্থলীর ধূলি আদি সব ভেট দিলা ॥৭৩॥

सनातनेर नामे पण्डित दण्डवत् कैला ।
रास-स्थलीर धूलि आदि सब भेट दिला ॥७३॥

सनातनेर—सनातन गोस्वामी के; **नामे**—नाम से; **पण्डित**—जगदानन्द पण्डित; **दण्डवत् कैला**—दण्डवत् किया; **रास-स्थलीर**—रासलीला स्थल की; **धूलि**—धूल; **आदि**—आदि; **सब**—सब; **भेट**—भेंट; **दिला**—दी।

अनुवाद

जगदानन्द पण्डित ने सनातन गोस्वामी की ओर से भी महाप्रभु को नमस्कार किया। तब उन्होंने महाप्रभु को रासलीला स्थल की धूल तथा अन्य भेंटें दीं।

সব দ্রব্য রাখিলেন, পীলু দিলেন বাঁটিয়া ।
'বৃন্দাবনের ফল' বলি' খাইলা হৃষ্ট হঞা ॥৭৪॥

सब द्रव्य राखिलेन, पीलु दिलेन बाँटिया ।
'वृन्दावनेर फल' बलि' खाइला हृष्ट हञा ॥७४॥

सब—सब; **द्रव्य**—भेंटें; **राखिलेन**—रख लीं; **पीलु**—पीलु फल; **दिलेन**—दिये; **बाँटिया**—बाँटने के लिए; **वृन्दावनेर फल**—वृन्दावन से आये फल; **बलि'**—इसलिए; **खाइला**—खाया; **हृष्ट हञा**—सूखपूर्वक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पीलु फलों के अतिरिक्त सारी भेंटें रख लीं और पीलु फलों को भक्तों में बाँट दिया। चूँकि ये फल वृन्दावन से आये थे, इसलिए हरएक ने परम सुखपूर्वक उन्हें खाया।

যে কেহ জানে, আঁটি চুষিতে লাগিল ।
যে না জানে গৌড়িয়া পীলু চাবাঞা খাইল ॥৭৫॥

ये केह जाने, आँटि चुषिते लागिल ।
ये ना जाने गौड़िया पीलु चावाञा खाइल ॥७५॥

ग्रे—जो; **केह**—कोई; **जाने**—परिचित; **आँटि**—बीजों को; **चुषिते लागिल**—चूसना शुरू किया; **ग्रे**—जो; **ना जाने**—नहीं जानते थे; **गौड़िया**—बंगाली भक्त; **पीलु**—पिलु; **चावाञा**—चबाकर; **खाइल**—खा लिया।

अनुवाद

जो भक्त पीलु फलों से परिचित थे, उन्होंने बीज को चूसना शुरू कर दिया, किन्तु बंगाली भक्त, जो यह नहीं जानते थे कि ये क्या हैं, उन्होंने बीजों को चबाकर निगल लिया।

मुखे तार झाल गेल, जिह्वा करे ज्वाला ।
वृन्दावनेर 'पीलू' खाइते एइ एक लीला ॥७६॥

मुखे तार झाल गेल, जिह्वा करे ज्वाला ।
वृन्दावनेर 'पीलु' खाइते एइ एक लीला ॥७६॥

मुखे तार—उनके मुँह; **झाल**—मिर्च जैसे तीते स्वाद से; **गेल**—लगी; **जिह्वा**—जीभें; **करे ज्वाला**—जलने; **वृन्दावनेर**—वृन्दावन के; **पीलु**—पीलु; **खाइते**—खाने से; **एइ**—यह; **एक लीला**—एक लीला।

अनुवाद

जिन लोगों ने बीज चबा लिये थे, उनकी जीभें मिर्च जैसे तीते स्वाद से जलने लगीं। इस तरह वृन्दावन से लाये गये पीलु फलों को खाना श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए एक लीला हो गई।

जगदानन्देर आगमने सबार उल्लास ।
एइ-मते नीलाचले प्रभुर विलास ॥७७॥

जगदानन्देर आगमने सबार उल्लास ।
एइ-मते नीलाचले प्रभुर विलास ॥७७॥

जगदानन्देर—जगदानन्द पण्डित के; **आगमने**—लौट आने पर; **सबार उल्लास**—हर व्यक्ति प्रफुल्लित था; **एइ-मते**—इस तरह; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **विलास**—लीलाओं का आनन्द।

अनुवाद

जब जगदानन्द पण्डित वृन्दावन से लौट आये, तो हर व्यक्ति

प्रफुल्लित था। इस तरह जगन्नाथ पुरी में निवास करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने लीलाओं का आनन्द लिया।

এক-দিন প্রভু যমেশ্বর-টোটা যাইতে ।
সেই-কালে দেব-দাসী লাগিলা গাইতে ॥৭৮॥

एक-दिन प्रभु यमेश्वर-टोटा याइते ।
सेइ-काले देव-दासी लागिला गाइते ॥७८॥

एक-दिन—एक दिन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यमेश्वर-टोटा**—यमेश्वर टोटा मन्दिर में; **याइते**—जब वे जा रहे थे; **सेइ-काले**—उस समय; **देव-दासी**—जगन्नाथ मन्दिर की एक स्त्री गायिका; **लागिला**—प्रारम्भ किया; **गाइते**—गाना।

अनुवाद

एक दिन जब महाप्रभु यमेश्वर के मन्दिर जा रहे थे, तब एक स्त्री गायिका (देवदासी) ने जगन्नाथ मन्दिर में गाना प्रारम्भ किया।

গুজ্জরী-রাগিণী লঞা সুমধুর-স্বরে ।
'গীত-গোবিন্দ'-পদ গায় জগ-মন হরে ॥৭৯॥

गुज्जरी-रागिणी लञा सुमधुर-स्वरे ।
'गीत-गोविन्द'-पद गाय जग-मन हरे ॥७९॥

गुज्जरी-रागिणी—गुज्जरी रागिनी; **लञा**—साथ गाया; **सुमधुर-स्वरे**—मधुर स्वर में; **गीत-गोविन्द**—जयदेव गोस्वामी कृत, गीतगोविन्द; **पद**—गाना; **गाय**—गाया; **जग-मन**—सारे जगत् के मन को; **हरे**—आकृष्ट कर लिया।

अनुवाद

उसने अत्यन्त मधुर स्वर में गुज्जरी रागिनी गायी और चूँकि इसका विषय जयदेव गोस्वामी कृत 'गीतगोविन्द' था, इसलिए गाने ने सारे जगत् के ध्यान को आकृष्ट कर लिया।

দূরে গান শুনি' প্রভুর হ-ইল আবেশ ।
স্ত্রী, পুরুষ, কে গায়,—না জানে বিশেষ ॥৮০॥

दूरे गान शुनि' प्रभुर ह-इल आवेश ।
स्त्री, पुरुष, के गाय,—ना जाने विशेष ॥ ८० ॥

दूरे—दूर से; **गान**—गाना; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ह-इल**—हुआ; **आवेश**—भावावेश; **स्त्री**—स्त्री; **पुरुष**—पुरुष; **के गाय**—कौन गा रहा है; **ना जाने**—नहीं जान पाये; **विशेष**—विशेष रूप से।

अनुवाद

दूर से गाने को सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु तुरन्त भावाविष्ट हो गये। वे यह नहीं जान पाये कि कोई पुरुष गा रहा है या स्त्री गा रही है।

তারে মিলিবারে প্রভু আবেশে ধাইলা ।
পথে 'সিজের বাড়ি' হয়, ফুটিয়া চলিলা ॥ ৮১ ॥
तारे मिलिबारे प्रभु आवेशे धाइला ।
पथे 'सिजेर बाड़ि' हय, फुटिया चलिला ॥ ८१ ॥

तारे—गानेवाले; **मिलिबारे**—मिलने के लिए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आवेशे**—भावावेश में; **धाइला**—दौड़े; **पथे**—रास्ते पर; **सिजेर बाड़ि**—कँटीली झाड़ियाँ; **हय**—थीं; **फुटिया**—चुभ गईं; **चलिला**—वे चलते गये।

अनुवाद

जैसे महाप्रभु उस गाने वाले से मिलने के लिए भावावेश में दौड़े, उनके शरीर में कँटीली झाड़ियाँ चुभ गईं।

অঙ্গে কাঁটা লাগিল, কিছু না জানিলা! ।
আস্তে-ব্যস্তে গোবিন্দ তাঁর পাছেতে ধাইলা ॥ ৮২ ॥
अङ्गे काँटा लागिल, किछु ना जानिला! ।
आस्ते-व्यस्ते गोविन्द ताँर पाछेते धाइला ॥ ८२ ॥

अङ्गे—शरीर पर; **काँटा**—काँटा; **लागिल**—चुभने से; **किछु**—कुछ; **ना जानिला**—पीड़ा नहीं हो रही थी; **आस्ते-व्यस्ते**—तेजी से; **गोविन्द**—उनका सेवक; **ताँर**—उनको; **पाछेते**—पीछे से; **धाइला**—दौड़ा।

अनुवाद

गोविन्द बहुत तेजी से महाप्रभु के पीछे दौड़ा। महाप्रभु को काँटे चुभने से कोई पीड़ा नहीं हो रही थी।

धाञा यायेन प्रभु, स्त्री आछे अल्प दूरे ।
स्त्री गाय' बलि' गोविन्द प्रभुरे कैला कोले ॥८३॥

धाञा ग्रायेन प्रभु, स्त्री आछे अल्प दूरे ।
स्त्री गाय' बलि' गोविन्द प्रभुरे कैला कोले ॥८३॥

धाञा—बड़ी तेजी से; **ग्रायेन**—वे जा रहे थे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **स्त्री**—वह गायिका (स्त्री); **आछे**—थी; **अल्प दूरे**—कुछ ही दूरी पर; **स्त्री गाय'**—स्त्री गा रही है; **बलि'**—कहकर; **गोविन्द**—उनका सेवक; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैला कोले**—अपनी बाँहों में पकड़कर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु तेजी से दौड़ रहे थे और वह स्त्री कुछ ही दूरी पर थी। तभी गोविन्द ने महाप्रभु को अपनी बाँहों में पकड़ लिया और वह चिल्लाया, "यह एक स्त्री गा रही है!"

स्त्री-नाम शुनि' प्रभुर बाह्य ह-इला ।
पुनरपि सेइ पथे बाहुड़ि' चलिला ॥८४॥

स्त्री-नाम शुनि' प्रभुर बाह्य ह-इला ।
पुनरपि सेइ पथे बाहुड़ि' चलिला ॥८४॥

स्त्री-नाम—"स्त्री" शब्द; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **बाह्य**—बाह्य चेतना; **ह-इला**—वापस आई; **पुनरपि**—फिर से; **सेइ पथे**—उस मार्ग पर; **बाहुड़ि' चलिला**—वे लौट गये।

अनुवाद

ज्योंही महाप्रभु ने "स्त्री" शब्द सुना, वे बाह्यरूप से सचेत हो उठे और वे लौट पड़े।

প্রভু কহে,—"গোবিন্দ, আজি রাখিলা জীবন ।
স্ত্রী-পরশ হৈলে আমার হ-ইত মরণ ॥৮৫॥

प्रभु कहे,—"गोविन्द, आजि राखिला जीवन ।
स्त्री-परश हैले आमार ह-इत मरण ॥८५॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **गोविन्द**—हे गोविन्द; **आजि**—आज; **राखिला जीवन**—तुमने मेरा जीवन बचाया; **स्त्री-परश हैले**—अगर मैं स्त्री को छू लेता तो; **आमार**—मेरी; **ह-इत**—वहीं पर हो जाती; **मरण**—मृत्यु।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हे गोविन्द, तुमने मेरा जीवन बचा लिया। यदि मैं स्त्री का शरीर छू लेता, तो अवश्य ही मर गया होता।

এ-ঋণ শোধিতে আমি নারিমু তোমার" ।
গোবিন্দ কহে,—জগন্নাথ রাখেন মুই কোন্ছার'? ॥৮৬॥

ए-ऋण शोधिते आमि नारिमु तोमार" ।
गोविन्द कहे,—जगन्नाथ राखेन मुइ कोन् छार'? ॥८६॥

ए-ऋण—यह ऋण; **शोधिते**—चुका; **आमि**—मैं; **नारिमु**—नहीं सकता; **तोमार**—तुम्हारा; **गोविन्द कहे**—गोविन्दने उत्तर दिया; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **राखेन**—बचाया; **मुइ**—मैं; **कोन् छार**—बहुत ही तुच्छ हूँ।

अनुवाद

"मैं कभी भी तुम्हारे ऋण को चुका नहीं सकूँगा।" गोविन्द ने उत्तर दिया, "भगवान् जगन्नाथ ने आपको बचाया है। मैं तो तुच्छ हूँ।"

প্রভু কহে,—"গোবিন্দ, মোর সঙ্গে রহিবা ।
যাহাঁ তাহাঁ মোর রক্ষায় সাবধান হ-ইবা" ॥৮৭॥

प्रभु कहे,—"गोविन्द, मोर सङ्गे रहिबा ।
य़ाहाँ ताहाँ मोर रक्षाय सावधान ह-इबा" ॥८७॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु बोले; **गोविन्द**—हे गोविन्द; **मोर सङ्गे रहिबा**—तुम सदैव मेरे साथ रहना; **य़ाहाँ ताहाँ**—कहीं भी और हर समय; **मोर**—मेरी; **रक्षाय**—रक्षा करना; **सावधान ह-इबा**—अत्यन्त सावधानी से।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "हे गोविन्द, तुम हमेशा मेरे साथ रहना। कहीं भी और सब जगह खतरा है, इसलिए तुम अत्यन्त सावधानी से मेरी रक्षा करना।"

এত বলি' লেউটি' প্রভু গেলা নিজ-স্থানে ।
শুনি' মহা-ভয় হ-ইল স্বরূপাদি-মনে ॥ ৮৮॥

এত বলি' লেউটি' প্রভু গেলা নিজ-স্থানে ।
শুনি' মহা-ভয় হ-ইল স্বরূপাদি-মনে ॥ ৮৮॥

এত বলি'—यह कहकर; **লেউটি'**—लौट आये; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **গেলা**—गये; **নিজ-স্থানে**—अपने स्थान पर; **শুনি'**—सुनकर; **মহা-ভয়**—अत्यधिक भयभीत; **হ-ইল**—हुए; **স্বরূপ-আদি-মনে**—स्वरूप दामोदर और अन्य सेवकों के मन।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु घर लौट आये। जब स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा उनके अन्य सेवकों ने इस घटना के बारे में सुना, तो वे अत्यधिक भयभीत हो उठे।

এথা তপন-মিশ্র-পুত্র রঘুনাথ-ভট্টাচার্য ।
প্রভুরে দেখিতে চলিলা ছাড়ি' সর্ব কার্য ॥ ৮৯॥

এথা তপন-মিশ্র-পুত্র রঘুনাথ-ভট্টাচার্য্য ।
প্রভুরে দেখিতে চলিলা ছাড়ি' সর্ব কার্য্য ॥ ৮৯॥

এথা—दूसरी ओर; **তপন-মিশ্র-পুত্র**—तपन मिश्र के पुत्र; **রঘুনাথ-ভট্টাচার্য্য**—रघुनाथ भट्टाचार्य; **প্রভুরে**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **দেখিতে**—मिलने के लिए; **চলিলা**—चले; **ছাড়ি'**—छोड़कर; **সর্ব কার্য্য**—सभी कार्य।

अनुवाद

इस बीच तपन मिश्र के पुत्र रघुनाथ भट्टाचार्य ने अपना सारा काम-काज त्यागकर श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने की इच्छा से अपना घर छोड़ दिया।

কাশী হৈতে চলিলা তেঁহো গৌড়-পথ দিয়া ।
সঙ্গে সেবক চলে তাঁর ঝালি বহিয়া ॥৯০॥

কাশী হৈতে চলিলা তেঁহো গৌড়-পথ দিয়া ।
সঙ্গে সেবক চলে তাঁর ঝালি বহিয়া ॥ ৯০ ॥

কাশী হৈতে—काशी से; **চলিলা**—चलने लगे; **তেঁহো**—वे; **গৌড়-পথ দিয়া**—बंगाल से होकर जाने वाले मार्ग से; **সঙ্গে**—उनके साथ; **সেবক**—एक सेवक; **চলে**—चला; **তাঁর**—उनकी; **ঝালি**—यात्रा की सामग्री; **বহিয়া**—उठानेवाला।

अनुवाद

साथ में सामान ढोने वाले एक नौकर को लेकर रघुनाथ भट्ट वाराणसी से चले और बंगाल से होकर जाने वाले मार्ग से यात्रा करने लगे।

পথে তারে মিলিলা বিশ্বাস-রামদাস ।
বিশ্বাস-খানার কায়স্থ তেঁহো রাজার বিশ্বাস ॥৯১॥

পথে তারে মিলিলা বিশ্বাস-রামদাস ।
বিশ্বাস-খানার কায়স্থ তেঁহো রাজার বিশ্বাস ॥ ৯১ ॥

পথে—रास्ते में; **তারে**—उनको; **মিলিলা**—मिले; **বিশ্বাস-রামদাস**—रामदास विश्वास; **বিশ্বাস-খানার**—सरकारी लेखांकन के विभाग में; **কায়স্থ**—कायस्थ जाति का; **তেঁহো**—वे; **রাজার**—राजा का; **বিশ্বাস**—सचिव।

अनुवाद

बंगाल में वे रामदास विश्वास से मिले, जो कायस्थ जाति का था। वह राजा के सचिवों में से एक था।

तात्पर्य

विश्वास-खानार कायस्थ शब्द कायस्थ जाति के सचिव या लिपिक का सूचक है। प्राय: कायस्थ लोग राजाओं, गवर्नरों या अन्य प्रमुख व्यक्तियों के सचिव होते थे। कहा जाता है कि उस समय सरकारी सचिवालय में काम करने वाला कोई भी व्यक्ति कायस्थ होता था।

সর্ব-শাস্ত্রে প্রবীণ, কাব্য-প্রকাশ-অধ্যাপক ।
পরম-বৈষ্ণব, রঘুনাথ-উপাসক ॥৯২॥

सर्व-शास्त्रे प्रवीण, काव्य-प्रकाश-अध्यापक ।
परम-वैष्णव, रघुनाथ-उपासक ॥ ९२ ॥

सर्व-शास्त्रे—समस्त प्रामाणिक शास्त्रों में; **प्रवीण**—महान पण्डित; **काव्य-प्रकाश**—विख्यात ग्रन्थ *काव्य प्रकाश;* **अध्यापक**—अध्यापक; **परम-वैष्णव**—परम वैष्णव; **रघुनाथ-उपासक**—भगवान् रामचन्द्र का उन्नत भक्त।

अनुवाद

रामदास विश्वास समस्त प्रामाणिक शास्त्रों में प्रवीण था। वह 'काव्यप्रकाश' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ का अध्यापक था और उन्नत भक्त तथा रघुनाथ (भगवान् रामचन्द्र) के उपासक के रूप में विख्यात था।

तात्पर्य

परम वैष्णव शब्द की टीका करते हुए श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कहते हैं कि जो कोई भी भगवान् में तदाकार होना चाहता है, वह शुद्ध वैष्णव नहीं हो सकता, किन्तु रामदास विश्वास भगवान् रामचन्द्र का महान् भक्त था, इसलिए वह लगभग वैष्णव था। उन दिनों शुद्ध वैष्णव तथा छद्म वैष्णव में अन्तर कर पाना कठिन था। इसलिए रामदास विश्वास एक वैष्णव कहलाता था, क्योंकि वह भगवान् रामचन्द्र की पूजा करता था।

अष्ट-प्रहर राम-नाम जपेन रात्रि-दिने ।
सर्व त्यजि' चलिला जगन्नाथ-दरशने ॥९३॥
अष्ट-प्रहर राम-नाम जपेन रात्रि-दिने ।
सर्व त्यजि' चलिला जगन्नाथ-दरशने ॥ ९३ ॥

अष्ट-प्रहर—दिनके चौबीसों घण्टे; **राम-नाम**—भगवान् राम के पवित्र नाम का; **जपेन**—जप करता था; **रात्रि-दिने**—रात और दिन; **सर्व**—सभी; **त्यजि'**—छोड़कर; **चलिला**—चला; **जगन्नाथ-दरशने**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने।

अनुवाद

रामदास ने सब कुछ त्याग दिया था और वह भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने जा रहा था। यात्रा करते हुए वह दिन के चौबीसों घण्टे भगवान् राम के पवित्र नाम का जप करता रहता था।

রঘুনাথ-ভট্টের সনে পথেতে মিলিলা ।
ভট্টের ঝালি মাথে করি' বহিয়া চলিলা ॥ ৯৪ ॥

রঘুনাথ-ভট্টের সনে পথেতে মিলিলা ।
ভট্টের ঝালি মাথে করি' বহিয়া চলিলা ॥ ৯৪ ॥

রঘুনাথ-ভট্টের—रघुनाथ भट्ट; **सने**—के साथ; **पथेते**—रास्ते में; **मिलिला**—वह मिला; **भट्टेर**—रघुनाथ भट्ट का; **झालि**—सामान; **माथे करि'**—सिर पर लेकर; **वहिया चलिला**—उठा ले चला।

अनुवाद

जब वह रास्ते में रघुनाथ भट्ट से मिला, तो उसने रघुनाथ का सामान अपने सिर पर रख लिया और उसे उठा ले चला।

নানা সেবা করি' করে পাদ-সম্বাহন ।
তাতে রঘুনাথের হয় সঙ্কুচিত মন ॥ ৯৫ ॥

নানা সেবা করি' করে পাদ-সম্বাহন ।
তাতে রঘুনাথের হয় সঙ্কুচিত মন ॥ ৯৫ ॥

नाना सेवा करि'—अनेक प्रकार से सेवा करता; **करे पाद-सम्वाहन**—पाँव भी दबाता; **ताते**—यहाँ तक कि; **रघुनाथेर**—रघुनाथ भट्ट के; **हय**—होता; **सङ्कुचित मन**—मन में संकोच।

अनुवाद

रामदास अनेक प्रकार से रघुनाथ भट्ट की सेवा करता, यहाँ तक कि वह उनके पाँव भी दबाता। रघुनाथ भट्ट को यह सारी सेवा लेते संकोच होता।

"তুমি বড় লোক, পণ্ডিত, মহা-ভাগবতে ।
সেবা না করিহ, সুখে চল মোর সাথে" ॥ ৯৬ ॥

"তুমি বড় লোক, পণ্ডিত, মহা-ভাগবতে ।
সেবা না করিহ, সুখে চল মোর সাথে" ॥ ৯৬ ॥

তুমি—आप; **बड़ लोक**—महान् व्यक्ति; **पण्डित**—विद्वान पण्डित; **महा-भागवते**—महान् भक्त; **सेवा ना करिह**—कृपया सेवा न करें; **सुखे**—प्रसन्न भाव में; **चल**—चलें; **मोर साथे**—मेरे साथ।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "आप एक सम्मानित भद्र व्यक्ति, विद्वान पण्डित तथा महान् भक्त हैं। कृपया आप मेरी सेवा करने का प्रयास न करें। बस, मेरे साथ प्रसन्न भाव में चलें।"

রামদাস কহে,—"আমি শূদ্র অধম! ।
'ব্রাহ্মণের সেবা',—এই মোর নিজ-ধর্ম ॥৯৭॥

रामदास कहे,—"आमि शूद्र अधम! ।
'ब्राह्मणेर सेवा',—एइ मोर निज-धर्म ॥ ९७॥

रामदास कहे—रामदास ने कहा; **आमि**—मैं; **शूद्र**—शूद्र; **अधम**—तुच्छ; **ब्राह्मणेर सेवा**—ब्राह्मण की सेवा करना; **एइ**—यह; **मोर निज-धर्म**—मेरा धार्मिक कर्तव्य।

अनुवाद

रामदास ने उत्तर दिया, "मैं शूद्र हूँ, पतित हूँ। ब्राह्मण की सेवा करना मेरा कर्तव्य तथा धर्म है।

সঙ্কোচ না কর তুমি, আমি—তোমার 'দাস' ।
তোমার সেবা করিলে হয় হৃদয়ে উল্লাস" ॥৯৮॥

सङ्कोच ना कर तुमि, आमि—तोमार 'दास' ।
तोमार सेवा करिले हय हृदये उल्लास" ॥ ९८॥

सङ्कोच—संकोच; **ना**—न; **कर**—करें; **तुमि**—आपका; **आमि**—मैं; **तोमार**—आपका; **दास**—दास; **तोमार**—आपकी; **सेवा**—सेवा; **करिले**—करने से; **हय**—होता है; **हृदये**—हृदय; **उल्लास**—प्रफुल्लित।

अनुवाद

"इसलिए कृपया संकोच न करें। मैं आपका दास हूँ और जब मैं आपकी सेवा करता हूँ, तो मेरा हृदय प्रफुल्लित हो उठता है।"

এত বলি' ঝালি বহেন, করেন সেবনে ।
রঘুনাথের তারক-মন্ত্র জপেন রাত্রি-দিনে ॥৯৯॥

एत बलि' झालि वहेन, करेन सेवने ।
रघुनाथेर तारक-मन्त्र जपेन रात्रि-दिने ॥ ९९ ॥

एत बलि'—यह कहकर; **झालि वहेन**—सामान उठाते हुए; **करेन सेवने**—सेवा करते हुए; **रघुनाथेर**—भगवान् रामचन्द्र; **तारक**—तारक; **मन्त्र**—पवित्र नाम का; **जपेन**—जप करते; **रात्रि-दिने**—रात और दिन।

अनुवाद

इस तरह रामदास रघुनाथ भट्ट का सामान उठाए चलता रहा और निष्ठापूर्वक उसकी सेवा करता रहा। वह रात-दिन भगवान् रामचन्द्र के पवित्र नाम का निरन्तर जप करता रहा।

एइ-मते रघुनाथ आइला नीलाचले ।
प्रभुर चरणे याञा मिलिला कुतूहले ॥ १०० ॥

एइ-मते रघुनाथ आइला नीलाचले ।
प्रभुर चरणे याञा मिलिला कुतूहले ॥ १०० ॥

एइ-मते—इस तरह; **रघुनाथ**—रघुनाथ भट्ट; **आइला**—आये; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **प्रभुर चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में; **याञा**—गये; **मिलिला**—मिलने; **कुतूहले**—परम हर्ष के साथ।

अनुवाद

इस तरह यात्रा करते हुए रघुनाथ भट्ट शीघ्र ही जगन्नाथपुरी आ गये। वहाँ वे परम हर्ष के साथ श्री चैतन्य महाप्रभु से मिले और उनके चरणकमलों में गिर पड़े।

दण्ड-परणाम करि' भट्ट पड़िला चरणे ।
प्रभु 'रघुनाथ' जानि कैला आलिङ्गने ॥ १०१ ॥

दण्ड-परणाम करि' भट्ट पड़िला चरणे ।
प्रभु 'रघुनाथ' जानि कैला आलिङ्गने ॥ १०१ ॥

दण्ड-परणाम करि'—नमस्कार करते हुए जमीन पर गिर पड़े; **भट्ट**—रघुनाथ भट्ट; **पड़िला चरणे**—चरणकमलों में गिर पड़े; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रघुनाथ**—रघुनाथ भट्ट; **जानि**—जानते हुए; **कैला आलिङ्गने**—आलिंगन किया।

अनुवाद

रघुनाथ भट्ट श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणों में दण्ड की तरह गिर पड़े। तब महाप्रभु ने यह भलीभाँति जानते हुए कि वे कौन हैं, उनका आलिंगन किया।

मिश्र आर शेखरेर दण्डवज्जानाइला ।
महाप्रभु ताँ-सबार वार्ता पुछिला ॥ १०२॥

मिश्र आर शेखरेर दण्डवत् जानाइला ।
महाप्रभु ताँ-सबार वार्ता पुछिला ॥ १०२॥

मिश्र—तपन मिश्र के; **आर**—और; **शेखरेर**—चन्द्रशेखर के; **दण्डवत्**—दण्डवत्; **जानाइला**—उन्होंने बताया; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँ-सबार**—सभी की ओर से; **वार्ता**—समाचार; **पुछिला**—पूछा।

अनुवाद

रघुनाथ ने तपन मिश्र तथा चन्द्रशेखर की ओर से श्री चैतन्य महाप्रभु को सादर नमस्कार किया और महाप्रभु ने भी उनके विषय में समाचार पूछा।

''भाल ह-इल आइला, देख 'कमल-लोचन' ।
आजि आमार एथा करिबा प्रसाद भोजन'' ॥ १०३॥

"भाल ह-इल आइला, देख 'कमल-लोचन' ।
आजि आमार एथा करिबा प्रसाद भोजन" ॥ १०३॥

भाल ह-इल—बहुत अच्छा हुआ; **आइला**—तुम यहाँ आये हो; **देख**—देखने; **कमल-लोचन**—कमलनयन भगवान् जगन्नाथ को; **आजि**—आज; **आमार एथा**—मेरे यहाँ; **करिबा प्रसाद भोजन**—प्रसाद ग्रहण करोगे।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "अच्छा हुआ कि तुम यहाँ आये हो। अब जाकर कमललोचन भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करो। आज तुम मेरे यहाँ प्रसाद ग्रहण करोगे।"

গোবিন্দেরে কহি' এক বাসা দেওয়াইলা ।
স্বরূপাদি ভক্ত-গণ-সনে মিলাইলা ॥ ১০৪॥

গোবিন্দেরে কহি' এক বাসা দেওয়াইলা ।
স্বরূপাদি ভক্ত-গণ-সনে মিলাইলা ॥ ১০৪॥

গোবিন্দেরে—गोविन्द को; **কহি'**—कहा; **এক**—एक; **বাসা**—रहने की जगह; **দেওয়াইলা**—दिलवाई; **স্বরূপ-আদি**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि; **ভক্ত-গণ-সনে**—सारे भक्तों से; **মিলাইলা**—मिलाया।

অনুবাদ

महाप्रभु ने गोविन्द से रघुनाथ भट्ट के ठहरने के लिए प्रबन्ध करने को कहा और तब उनका परिचय स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि सारे भक्तों से कराया।

এই-মত প্রভু-সঙ্গে রহিলা অষ্ট-মাস ।
দিনে দিনে প্রভুর কৃপায় বাড়য়ে উল্লাস ॥ ১০৫॥

এই-মত প্রভু-সঙ্গে রহিলা অষ্ট-মাস ।
দিনে দিনে প্রভুর কৃপায় বাড়য়ে উল্লাস ॥ ১০৫॥

এই-মত—इस तरह से; **প্রভু-সঙ্গে**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **রহিলা**—रहे; **অষ্ট-মাস**—आठ महीने; **দিনে দিনে**—दिनों दिन; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **কৃপায়**—कृपा से; **বাড়য়ে উল্লাস**—दिव्य सुख का अनुभव किया।

অনুবাদ

इस तरह रघुनाथ भट्ट लगातार आठ महीनों तक श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ रहे और महाप्रभु की कृपा से उन्हें प्रतिदिन अधिकाधिक दिव्य सुख का अनुभव होता रहा।

মধ্যে মধ্যে মহাপ্রভুর করেন নিমন্ত্রণ ।
ঘর-ভাত করেন, আর বিবিধ ব্যঞ্জন ॥ ১০৬॥

মধ্যে মধ্যে মহাপ্রভুর করেন নিমন্ত্রণ ।
ঘর-ভাত করেন, আর বিবিধ ব্যঞ্জন ॥ ১০৬॥

मध्ये मध्ये—बीच बीचमें; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **करेन निमन्त्रण**—निमन्त्रित करते; **घर-भात करेन**—घर पर चावल पकाते; **आर**—और; **विविध व्यञ्जन**—अनेक प्रकार की सब्जियाँ।

अनुवाद

वे कुछ समय पर विविध सब्जियों के साथ चावल पकाते और श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने घर आमन्त्रित करते।

রঘুনাথ-ভট্ট—পাকে অতি সুনিপুণ ।
যেই রান্ধে, সেই হয় অমৃতের সম ॥১০৭॥

रघुनाथ-भट्ट—पाके अति सुनिपुण ।
ग्रेइ रान्धे, सेइ हय अमृतेर सम ॥ १०७॥

रघुनाथ-भट्ट—रघुनाथ भट्ट; **पाके**—रसोई में; **अति सु-निपुण**—अत्यन्त निपूण; **ग्रेइ रान्धे**—जो भी पकाते; **सेइ**—वह; **हय**—होता है; **अमृतेर सम**—अमृत जैसा।

अनुवाद

रघुनाथ भट्ट दक्ष रसोइया थे। वे जो भी पकाते वह अमृत का सा स्वाद देता।

পরম সন্তোষে প্রভু করেন ভোজন ।
প্রভুর অবশিষ্ট-পাত্র ভট্টের ভক্ষণ ॥১০৮॥

परम सन्तोषे प्रभु करेन भोजन ।
प्रभुर अवशिष्ट-पात्र भट्टेर भक्षण ॥ १०८॥

परम सन्तोषे—परम सन्तोष; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन भोजन**—भोजन ग्रहण करते; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **अवशिष्ट-पात्र**—बचा हुआ पात्र; **भट्टेर**—रघुनाथ भट्ट; **भक्षण**—ग्रहण करते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु उनके द्वारा बनाये गये भोजन को परम सन्तोष के साथ ग्रहण करते। जब महाप्रभु तुष्ट हो जाते, तब रघुनाथ भट्ट उनका शेष ग्रहण करते।

রামদাস যদি প্রথম প্রভুরে মিলিলা ।
মহাপ্রভু অধিক তাঁরে কৃপা না করিলা ॥১০৯॥

रामदास यदि प्रथम प्रभुरे मिलिला ।
महाप्रभु अधिक ताँरे कृपा ना करिला ॥ १०९ ॥

रामदास—भक्त रामदास विश्वास; **यदि**—जब; **प्रथम**—पहली बार; **प्रभुरे मिलिला**—श्री चैतन्य महाप्रभु से मिला; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अधिक**—ज्यादा; **ताँरे**—उनके ऊपर; **कृपा**—कृपा; **ना करिला**—नहीं की।

अनुवाद

जब रामदास विश्वास श्री चैतन्य महाप्रभु से मिला, तो महाप्रभु ने उस पर कोई विशेष कृपा नहीं दर्शाई, यद्यपि यह उनकी प्रथम भेंट थी।

অন্তরে মুমুক্ষু তেঁহো, বিদ্যা-গর্ববান্ ।
সর্ব-চিত্ত-জ্ঞাতা প্রভু—সর্বজ্ঞ ভগবান্ ॥১১০॥

अन्तरे मुमुक्षु तेंहो, विद्या-गर्ववान् ।
सर्व-चित्त-ज्ञाता प्रभु—सर्वज्ञ भगवान् ॥ ११० ॥

अन्तरे—अन्तर से; **मुमुक्षु**—मुक्ति का इच्छुक; **तेंहो**—वह; **विद्या-गर्ववान्**—अपनी विद्या के प्रति बहुत अहंकारी; **सर्व-चित्त-ज्ञाता**—सबके हृदय की बात समझने वाले; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सर्व-ज्ञ भगवान्**—सर्वज्ञ भगवान्।

अनुवाद

अन्तर से रामदास विश्वास निर्विशेषवादी था, जो भगवान् से तादात्म्य चाहता था और अपनी विद्या के प्रति उसे बहुत अहंकार था। सर्वज्ञ पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् होने के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु किसी के भी हृदय की बात समझ सकते हैं और इस तरह वे इन सारी बातों को जानते थे।

রামদাস কৈলা তবে নীলাচলে বাস ।
পট্টনায়ক-গোষ্ঠীকে পড়ায় 'কাব্য-প্রকাশ' ॥১১১॥

रामदास कैला तबे नीलाचले वास ।
पट्टनायक-गोष्ठीके पड़ाय 'काव्य-प्रकाश' ॥ १११ ॥

रामदास—रामदास विश्वास; **कैला**—किया; **तबे**—तब; **नीलाचले वास**—जगन्नाथ पुरी में निवास; **पट्टनायक-गोष्ठीके**—पट्टनायक परिवार को (भवानन्द राय के वंशजों); **पड़ाय**—पढ़ाने लगा; **काव्य-प्रकाश**—*काव्यप्रकाश* का ग्रन्थ।

अनुवाद

तब रामदास विश्वास ने नीलाचल में ही अपना आवास बना लिया। वह पट्टनायक परिवार (भवानन्द राय के वंशजों) को 'काव्यप्रकाश' पढ़ाने लगा।

অষ্ট-মাস রহি' প্রভু ভট্টে বিদায় দিলা ।
'বিবাহ না করিহ' বলি' নিষেধ করিলা ॥ ১১২॥

অষ্ট-মাস রহি' প্রভু ভট্টে বিদায় দিলা ।
'বিবাহ না করিহ' বলি' নিষেধ করিলা ॥ ১১২॥

অষ্ট-মাস—आठ मास तक; **রহি'**—रहे; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ভট্টে**—रघुनाथ भट्ट को; **বিদায় দিলা**—विदा किया; **বিবাহ না করিহ**—विवाह मत करना; **বলি'**—कहकर; **নিষেধ করিলা**—उन्हें मना किया।

अनुवाद

आठ मास बाद, जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ भट्ट को विदा किया, तो महाप्रभु ने उनसे विवाह करने के लिए स्पष्ट रूप से मना किया। महाप्रभु ने कहा, "विवाह मत करना।"

तात्पर्य

अविवाहित रहते हुए रघुनाथ भट्टाचार्य अति उन्नत भक्त बन चुके थे। श्री चैतन्य महाप्रभु इसे जान गये, इसीलिए उन्होंने परामर्श दिया कि वे भौतिक इन्द्रियतृप्ति की विधि शुरू न करें। विवाह तो उन लोगों के लिए छूट है, जो अपनी इन्द्रियों को वश में करने में असमर्थ होते हैं। किन्तु रघुनाथ को इन्द्रियतृप्ति की कोई इच्छा न थी, क्योंकि वे कृष्ण के महान् भक्त थे। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें विवाह-बन्धन में न पड़ने का परामर्श दिया। सामान्यतया जो व्यक्ति विवाहित होता है, वह आध्यात्मिक चेतना में अधिक उन्नति नहीं कर पाता। वह अपने परिवार के प्रति आसक्त हो जाता है और

इन्द्रियतृप्ति के प्रति उन्मुख रहता है। इस तरह उसकी आध्यात्मिक उन्नति या तो अत्यन्त मन्द होती है या होती ही नहीं।

वृद्ध माता-पितार याइ' करह सेवन ।
वैष्णव-पाश भागवत कर अध्ययन ॥ ११३ ॥

वृद्ध माता-पितार याइ' करह सेवन ।
वैष्णव-पाश भागवत कर अध्ययन ॥ ११३ ॥

वृद्ध—वृद्ध; **माता-पितार**—माता और पिता के यहाँ; **याइ'**—वापस जाओगे; **करह सेवन**—सेवा करना; **वैष्णव-पाश**—शुद्ध वैष्णव; **भागवत**—*श्रीमद् भागवत;* **कर अध्ययन**—का अध्ययन करना।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ भट्ट से कहा, "जब तुम अपने घर लौटोगे, तो अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करना, जो कि भक्त हैं और तुम किसी शुद्ध वैष्णव से, जिसने भगवत् साक्षात्कार किया हो, श्रीमद्भागवत का अध्ययन करना।"

तात्पर्य

यह ध्यान देना चाहिए कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने किस तरह रघुनाथ भट्टाचार्य को *श्रीमद्भागवत* सीखने का उपदेश दिया। उन्होंने किसी पेशेवर व्यक्ति से नहीं, अपितु वास्तविक भक्त अर्थात् *भागवत* से *श्रीमद्भागवत* समझने का उपदेश दिया। उन्होंने रघुनाथ भट्ट को अपने माता-पिता की सेवा करने का परामर्श भी दिया, क्योंकि वे दोनों ही भगवान् चैतन्य के भक्त थे। जो कोई भी कृष्णभावनामृत में आगे बढ़ना चाहता है, उसे कृष्ण के भक्तों की सेवा करने का प्रयास करना चाहिए। जैसाकि नरोत्तम दास ठाकुर कहते हैं—*छाड़िया वैष्णव-सेवा निस्तार पायेछे केबा*—"स्वरूपसिद्ध वैष्णव की सेवा किये बिना भौतिकतावादी जीवन शैली से कोई छुटकारा नहीं पा सकता।" श्री चैतन्य महाप्रभु ने कभी भी रघुनाथ भट्ट को सामान्य माता-पिता की सेवा करने के लिए उपदेश न दिया होता, किन्तु क्योंकि उनके माता-पिता वैष्णव थे, इसलिए उन्होंने उसे माता-पिता की सेवा करने का उपदेश दिया।

कोई प्रश्न कर सकता है कि, "सामान्य माता-पिता की सेवा क्यों नहीं करनी चाहिए?" *श्रीमद्भागवत* (५.५.१८) में कहा गया है :

गुरुर्न स स्यात् स्वजनो न स स्यात्
पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात्।
दैवं न तत् स्यात् न पतिश्च स स्यान्
न मोचयेद् यः समुपेतमृत्युम्॥

"जो व्यक्ति अपने आश्रित को जन्म-मृत्यु के मार्ग से मुक्त नहीं कर सकता, उसे न तो गुरु, सम्बन्धी, पिता या माता या आराध्य देव बनना चाहिए, न ही ऐसे व्यक्ति को पति बनना चाहिए।" हर व्यक्ति को जन्म के समय से ही सहज में माता तथा पिता मिल जाते हैं, किन्तु वास्तविक माता तथा पिता तो वे होते हैं, जो अपनी संतानों को आसन्न मृत्यु के चंगुल से छुड़ा सकते हैं। ऐसा वे ही माता-पिता कर पाते हैं, जो कृष्णभावना में प्रबुद्ध होते हैं। इसलिए ऐसे माता-पिता जो अपनी संतानों को कृष्णभावना में प्रकाशित नहीं कर सकते, उन्हें वास्तविक माता-पिता के रूप में नहीं स्वीकार किये जा सकते। *भक्तिरसामृतसिन्धु* के निम्नलिखित श्लोक (१.२.२००) से सामान्य माता-पिता की सेवा करने की व्यर्थता प्रकट होती है :

लौकिकी वैदिकी वापि या क्रिया क्रियते मुने।
हरिसेवानुकूलैव स कार्या भक्तिमिच्छता॥

"मनुष्य को केवल वे ही कार्य—चाहे वे लौकिक हों या वैदिक—करने चाहिए, जो कृष्णभावना के अनुशीलन के अनुकूल हों।"

श्रीमद्भागवत के अध्ययन के सम्बन्ध में श्री चैतन्य महाप्रभु स्पष्ट परामर्श देते हैं कि इसे अवैष्णव पेशेवर वाचक से सुनने से बचा जाय। इस सम्बन्ध में सनातन गोस्वामी ने *पद्म पुराण* का एक श्लोक उद्धृत किया है :

अवैष्णवमुखोद्गीर्णं पूतं हरिकथामृतम्।
श्रवणं नैव कर्तव्यं सर्पोच्छिष्टं यथा पयः॥

"अवैष्णव से न तो सुना जाय, न उपदेश ग्रहण किया जाय। यदि वह कृष्ण के विषय में बोले, तो भी ऐसे उपदेश को ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह सर्प के होठों द्वारा स्पर्श किये हुए दूध के समान होता है।" आजकल ऐसे

लोगों से भागवत सप्ताह कराना तथा *श्रीमद्भागवत* सुनना एक प्रथा बन चुकी है, जो प्रबुद्ध भक्त या स्वरूपसिद्ध व्यक्ति न होकर और कुछ होते हैं। ऐसे अनेक मायावादी भी हैं, जो लोगों के समूह के लिए *श्रीमद्भागवत* बाँचते हैं। हाल ही में वृन्दावन में अनेक मायावादियों ने *श्रीमद्भागवत* बाँचना प्रारम्भ कर दिया है और चूँकि वे शब्दजाल द्वारा व्याकरण के दाँव-पेच की सहायता से अर्थ को तोड़-मरोड़कर *भागवत* प्रस्तुत कर सकते हैं, इसलिए ऐसे भौतिकतावादी व्यक्ति जो आध्यात्मिक प्रथा के रूप में वृन्दावन जाते हैं, उन को सुनना पसन्द करते हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ने इन सबका स्पष्ट रूप से निषेध किया है। हमें यह सावधानीपूर्वक ध्यान देना होगा कि ये मायावादी वाचक *श्रीमद्भागवत* का अर्थ स्वयं भी नहीं जानते, अतएव इसे सुनाकर वे अन्यों का उद्धार कर ही नहीं सकते। दूसरी ओर, भगवान् का उन्नत भक्त भौतिक बन्धन से मुक्त होता है। वह अपने जीवन तथा कर्म में *श्रीमद्भागवत* को मूर्त रूप देता है। इसलिए हमारा परामर्श है कि जो कोई भी *श्रीमद्भागवत* सीखना चाहता है, वह ऐसे ही स्वरूपसिद्ध आत्मा के पास पहुँचे।

পুনরপি এক-বার আসিহ নীলাচলে'' ।
এত বলি' কণ্ঠ-মালা দিলা তাঁর গলে ॥ ১১৪॥

পুনরপি এক-বার আসিহ নীলাচলে" ।
এত বলি' কণ্ঠ-মালা দিলা তাঁর গলে ॥ ১১৪॥

পুনরপি—फिर से आना; **এক-বার**—एक बार; **আসিহ নীলাচলে**—जगन्नाथ पुरी आना; **এত বলি'**—ऐसा कहकर; **কণ্ঠ-মালা**—गले की माला; **দিলা**—दी; **তাঁর গলে**—उनके गले में।

अनुवाद

अन्त में श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "नीलाचल (जगन्नाथ पुरी) फिर से आना।" यह कहकर महाप्रभु ने अपनी कण्ठी-माला रघुनाथ भट्ट के गले में डाल दी।

আলিঙ্গন করি' প্রভু বিদায় তাঁরে দিলা ।
প্রেমে গর গর ভট্ট কান্দিতে লাগিলা ॥ ১১৫॥

आलिङ्गन करि' प्रभु विदाय ताँरे दिला ।
प्रेमे गर गर भट्ट कान्दिते लागिला ॥ ११५ ॥

आलिङ्गन करि'—आलिंगन किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **विदाय ताँरे दिला**—विदा कर दिया; **प्रेमे**—प्रेम में; **गर गर**—व्याकुल; **भट्ट**—रघुनाथ भट्ट; **कान्दिते लागिला**—रोने लगे।

अनुवाद

इसके बाद महाप्रभु ने उनका आलिंगन किया और उन्हें विदा किया। प्रेम से विह्वल होकर तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के आसन्न विछोह के कारण रघुनाथ भट्ट रोने लगे।

স্বরূপ-আদি ভক্ত-ঠাঞি আজ্ঞা মাগিয়া ।
বারাণসী আইলা ভট্ট প্রভুর আজ্ঞা পাঞা ॥ ১১৬ ॥

स्वरूप-आदि भक्त-ठाञि आज्ञा मागिया ।
वाराणसी आइला भट्ट प्रभुर आज्ञा पाञा ॥ ११६ ॥

स्वरूप-आदि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी आदि; **भक्त-ठाञि**—सारे भक्त; **आज्ञा मागिया**—आज्ञा माँगकर; **वाराणसी आइला**—वाराणसी लौट गये; **भट्ट**—रघुनाथ भट्ट; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **आज्ञा पाञा**—आज्ञा लेकर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु से तथा स्वरूप दामोदर आदि सारे भक्तों से आज्ञा लेकर रघुनाथ भट्ट वाराणसी लौट गये।

চারি-বত্সর ঘরে পিতা-মাতার সেবা কৈলা ।
বৈষ্ণব-পণ্ডিত-ঠাঞি ভাগবত পড়িলা ॥ ১১৭ ॥

चारि-वत्सर घरे पिता-मातार सेवा कैला ।
वैष्णव-पण्डित-ठाञि भागवत पड़िला ॥ ११७ ॥

चारि-वत्सर—चार वर्षों तक; **घरे**—घर पर; **पिता-मातार**—माता पिता की; **सेवा कैला**—सेवा करते; **वैष्णव-पण्डित-ठाञि**—स्वरूपसिद्ध उन्नत वैष्णव से; **भागवत पड़िला**—उन्होंने *श्रीमद्भागवत* का अध्ययन किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेशानुसार वे लगातार चार वर्षों तक अपने माता-पिता की सेवा करते रहे। उन्होंने एक स्वरूपसिद्ध वैष्णव से नियमित रूप से 'श्रीमद्भागवत' का अध्ययन भी किया।

पिता-माता काशी पाइले उदासीन हञा ।
पुनः प्रभुर ठाञि आइला गृहादि छाड़िया ॥ ११८॥
पिता-माता काशी पाइले उदासीन हञा ।
पुनः प्रभुर ठाञि आइला गृहादि छाड़िया ॥ ११८॥

पिता-माता—पिता और माता का; **काशी पाइले**—जब काशी (वाराणसी) में देहान्त हो गया; **उदासीन हञा**—उदासीन होकर; **पुनः**—फिर से; **प्रभुर ठाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु के पास; **आइला**—लौट आये; **गृह-आदि छाड़िया**—अपने घर के सारे सम्बन्धों को त्यागकर।

अनुवाद

जब उनके माता पिता का काशी (वाराणसी) में देहान्त हो गया, तो वे विरक्त हो गये। अतएव अपने घर के सारे सम्बन्धों को त्यागकर वे श्री चैतन्य महाप्रभु के पास लौट आये।

पूर्ववतष्ट-मास प्रभु-पाश छिला ।
अष्ट-मास रहि' पुनः प्रभु आज्ञा दिला ॥ ११९॥
पूर्ववत् अष्ट-मास प्रभु-पाश छिला ।
अष्ट-मास रहि' पुनः प्रभु आज्ञा दिला ॥ ११९॥

पूर्व-वत्—पहले की तरह; **अष्ट-मास**—आठ महीनों के लिए; **प्रभु-पाश छिला**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ रहे; **अष्ट-मास रहि'**—आठ महीने रहने के बाद; **पुनः**—फिर से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आज्ञा दिला**—आज्ञा दी।

अनुवाद

पहले की तरह रघुनाथ लगातार आठ महीने श्री चैतन्य महाप्रभु के पास रुके। तब महाप्रभु ने उन्हें यह आदेश दिया।

"आमार आज्ञाय, रघुनाथ, याह वृन्दावने ।
ताहाँ याञा रह रूप-सनातन-स्थाने ॥१२०॥

"आमार आज्ञाय, रघुनाथ, याह वृन्दावने ।
ताहाँ याञा रह रूप-सनातन-स्थाने ॥१२०॥

आमार आज्ञाय—मेरी आज्ञानुसार; **रघुनाथ**—हे रघुनाथ; **याह वृन्दावने**—वृन्दावन जाओ; **ताहाँ याञा**—वहाँ जाकर; **रह**—रहना; **रूप-सनातन-स्थाने**—रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी के संरक्षण में।

अनुवाद

"हे रघुनाथ, मेरी आज्ञानुसार तुम वृन्दावन जाओ। वहाँ रूप तथा सनातन गोस्वामियों के संरक्षण में रहना।

भागवत पड़, सदा लह कृष्ण-नाम ।
अचिरे करिबेन कृपा कृष्ण भगवान्" ॥१२१॥

भागवत पड़, सदा लह कृष्ण-नाम ।
अचिरे करिबेन कृपा कृष्ण भगवान्" ॥१२१॥

भागवत पड़—*श्रीमद् भागवत* पढ़ना; **सदा**—हमेशा; **लह कृष्ण-नाम**—हरे कृष्ण मन्त्र का जप करना; **अचिरे**—जल्द ही; **करिबेन**—करेंगे; **कृपा**—कृपा; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्।

अनुवाद

"तुम वृन्दावन जाकर चौबीसों घण्टे हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करना तथा निरन्तर श्रीमद्भागवत पढ़ना। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण शीघ्र ही तुम पर कृपा करेंगे।"

एत बलि' प्रभु ताँरे आलिङ्गन कैला ।
प्रभुर कृपाते कृष्ण-प्रेमे मत्त हैला ॥१२२॥

एत बलि' प्रभु ताँरे आलिङ्गन कैला ।
प्रभुर कृपाते कृष्ण-प्रेमे मत्त हैला ॥१२२॥

एत बलि'—यह कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—रघुनाथ भट्ट; **आलिङ्गन**

कैला—आलिंगन किया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपाते**—कृपा से; **कृष्ण-प्रेमे**—कृष्ण के प्रेम में; **मत्त हैला**—जागृत हो उठा।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ भट्ट का आलिंगन किया और महाप्रभु की कृपा से रघुनाथ में कृष्ण-प्रेम जागृत हो उठा।

चौद्द-हात जगन्नाथेर तुलसीर माला ।
छुटा-पान-विड़ा महोत्सवे पाञाछिला ॥ १२३॥

चौद्द-हात जगन्नाथेर तुलसीर माला ।
छुटा-पान-विड़ा महोत्सवे पाञाछिला ॥ १२३॥

चौद्द-हात—चौदह हाथ (लगभग इक्कीस फीट) लम्बी; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ की; **तुलसीर माला**—तुलसी माला; **छुटा-पान-विड़ा**—पान; **महोत्सवे**—एक उत्सव में; **पाञाछिला**—मिला।

अनुवाद

एक उत्सव में श्री चैतन्य महाप्रभु को कुछ सादे पान तथा चौदह हाथ लम्बी तुलसी की माला दी गई थी। यह माला जगन्नाथ जी की पहनी हुई थी।

सेइ माला, छुटा पान प्रभु ताँरे दिला ।
'इष्ट-देव' करि' माला धरिया राखिला ॥ १२४॥

सेइ माला, छुटा पान प्रभु ताँरे दिला ।
'इष्ट-देव' करि' माला धरिया राखिला ॥ १२४॥

सेइ माला—वह माला; **छुटा पान**—वह पान; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे दिला**—उन्हें दे दिया; **इष्ट-देव**—आराध्य देव की तरह; **करि'**—स्वीकार की; **माला**—वह माला; **धरिया राखिला**—रख दी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने वह माला तथा पान रघुनाथ भट्ट को दे दिये, जिन्होंने इन्हें आराध्य देव की तरह स्वीकार किया और सुरक्षित रख लिया।

প্রভুর ঠাঞি আজ্ঞা লঞা গেলা বৃন্দাবনে ।
আশ্রয় করিলা আসি' রূপ-সনাতনে ॥ ১২৫ ॥

प्रभुर ठाञि आज्ञा लञा गेला वृन्दावने ।
आश्रय करिला आसि' रूप-सनातने ॥ १२५ ॥

प्रभुर ठाञि—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **आज्ञा लञा**—अनुमति लेकर; **गेला वृन्दावने**—वृन्दावन को गये; **आश्रय करिला**—आश्रय लिया; **आसि'**—आकर; **रूप-सनातने**—रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी की।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु से आज्ञा लेकर रघुनाथ भट्ट वृन्दावन के लिए चल पड़े। वहाँ पहुँचकर वे रूप तथा सनातन गोस्वामियों के संरक्षण में रहने लगे।

রূপ-গোসাঞির সভায় করেন ভাগবত-পঠন ।
ভাগবত পড়িতে প্রেমে আউলায় তাঁর মন ॥ ১২৬ ॥

रूप-गोसाञिर सभाय करेन भागवत-पठन ।
भागवत पड़िते प्रेमे आउलाय ताँर मन ॥ १२६ ॥

रूप-गोसाञिर सभाय—रूप, सनातन और अन्य वैष्णवों की सभा में; **करेन**—किया; **भागवत-पठन**—*श्रीमद् भागवत* पठन किया; **भागवत पड़िते**—*श्रीमद् भागवत* पढ़ते समय; **प्रेमे**—प्रेम से; **आउलाय**—व्याकुल हो उठा; **ताँर मन**—उनका मन।

अनुवाद

जब रघुनाथ भट्ट रूप तथा सनातन की संगति में श्रीमद्भागवत पढ़ते, तो वे कृष्ण-प्रेम से अभिभूत हो उठते।

অশ্রু, কম্প, গদগদ প্রভুর কৃপাতে ।
নেত্র কণ্ঠ রোধে বাষ্প, না পারে পড়িতে ॥ ১২৭ ॥

अश्रु, कम्प, गद्गद प्रभुर कृपाते ।
नेत्र कण्ठ रोधे बाष्प, ना पारे पड़िते ॥ १२७ ॥

अश्रु—अश्रु; **कम्प**—कम्पन; **गद्गद**—वाणी लडखडना; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु

की; **कृपाते**—कृपा से; **नेत्र**—आँखे; **कण्ठ**—कण्ठ; **रोधे**—अवरोध; **बाष्प**—आँसू; **ना पारे पड़िते**—सुना नहीं पाते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से उनमें प्रेमावेश के लक्षण—अश्रु, कम्प तथा वाणी अवरोध—प्रकट होने लगते। उनकी आँखें आँसू से भर जातीं, उनका कंठ रुद्ध हो जाता और इस कारण वे श्रीमद्भागवत नहीं सुना पाते थे।

पिक-स्वर-कण्ठ, ताते रागेर विभाग ।
एक-श्लोक पड़िते फिराय तिन-चारि राग ॥ १२८॥

पिक-स्वर-कण्ठ, ताते रागेर विभाग ।
एक-श्लोक पड़िते फिराय तिन-चारि राग ॥ १२८॥

पिक-स्वर-कण्ठ—कोयल के समान मीठी वाणी; **ताते**—उसके ऊपर; **रागेर**—राग; **विभाग**—विभाग; **एक-श्लोक**—एक श्लोक; **पड़िते**—पाठ; **फिराय**—बदलकर; **तिन-चारि राग**—तीन चार रागों में।

अनुवाद

उनकी वाणी कोयल की वाणी के समान मीठी थी और वे श्रीमद्भागवत के प्रत्येक श्लोक को तीन-चार अलग रागों में सुना सकते थे। इस तरह उनका वाचन सुनने में अत्यन्त मधुर लगता।

कृष्णेर सौन्दर्य-माधुर्य यबे पड़े, शुने ।
प्रेमेते विह्वल तबे, किछुइ ना जाने ॥ १२९॥

कृष्णेर सौन्दर्य-माधुर्य यबे पड़े, शुने ।
प्रेमेते विह्वल तबे, किछुइ ना जाने ॥ १२९॥

कृष्णेर—कृष्ण के; **सौन्दर्य**—सौन्दर्य; **माधुर्य**—माधुर्य; **यबे**—तब; **पड़े**—पढ़ते; **शुने**—सुनते; **प्रेमेते**—कृष्ण के प्रेम से; **विह्वल**—विह्वल होकर; **तबे**—तब; **किछुइ**—कुछ भी; **ना जाने**—नहीं जानते थे।

अनुवाद

जब वे कृष्ण के सौन्दर्य और माधुर्य का पाठ करते या सुनते, तब वे प्रेम से विह्वल हो उठते और सब कुछ भूल जाते।

गोविन्द-चरणे कैला आत्म-समर्पण ।
गोविन्द-चरणारविन्द——याँर प्राण-धन ॥१३०॥

गोविन्द-चरणे कैला आत्म-समर्पण ।
गोविन्द-चरणारविन्द——याँर प्राण-धन ॥१३०॥

गोविन्द-चरणे—भगवान् गोविन्द के चरणकमलों में; **कैला आत्म-समर्पण**—उन्होंने पूर्ण आत्मसमर्पण कर दिया; **गोविन्द-चरण-अरविन्द**—भगवान् गोविन्द के चरणकमल; **याँर**—जिनके; **प्राण-धन**—जीवनाधार।

अनुवाद

इस तरह रघुनाथ भट्ट पूर्णरूपेण भगवान् गोविन्द के चरणकमलों में समर्पित हो गये और उनके चरणकमल ही उनके जीवनाधार बन गये।

निज शिष्ये कहि' गोविन्देर मन्दिर कराइला ।
वंशी, मकर कुण्डलादि 'भूषण' करि' दिला ॥१३१॥

निज शिष्ये कहि' गोविन्देर मन्दिर कराइला ।
वंशी, मकर कुण्डलादि 'भूषण' करि' दिला ॥१३१॥

निज शिष्ये—अपने शिष्यों से; **कहि'**—कहकर; **गोविन्देर**—भगवान् गोविन्द के; **मन्दिर कराइला**—मन्दिर बनवाने का; **वंशी**—वंशी (बाँसुरी); **मकर कुण्डल-आदि**—मकराकृतिवाले कान के कुण्डल आदि; **भूषण**—आभूषण; **करि'**—तैयार; **दिला**—किये।

अनुवाद

फलस्वरूप रघुनाथ भट्ट ने अपने शिष्यों से गोविन्द के लिए मन्दिर बनवाने का आदेश दिया। उन्होंने वंशी तथा मकराकृति वाले कान के कुण्डल जैसे विविध आभूषण गोविन्द के लिए तैयार किये।

ग्राम्य-वार्ता ना शुने, ना कहे जिह्वाय ।
कृष्ण-कथा-पूजादिते अष्ट-प्रहर याय ॥१३२॥

ग्राम्य-वार्ता ना शुने, ना कहे जिह्वाय ।
कृष्ण-कथा-पूजादिते अष्ट-प्रहर याय ॥ १३२ ॥

ग्राम्य-वार्ता—सामान्य वार्ता; **ना शुने**—कभी न सुनते; **ना**—ना; **कहे**—कहते; **जिह्वाय**—अपनी वाणी से; **कृष्ण-कथा**—कृष्ण की वार्ता; **पूजा-आदिते**—और कृष्ण की पूजा इत्यादि; **अष्ट-प्रहर याय**—पूरे दिन और रातभर।

अनुवाद

रघुनाथ भट्ट न तो इस भौतिक जगत् की कोई वार्ता सुनते, न उसके विषय में कहते। वे केवल कृष्ण की वार्ता करते और अहर्निश कृष्ण की पूजा करते।

বৈষ্ণবের নিন্দ্য-কর্ম নাহি পাড়ে কাণে ।
সবে কৃষ্ণ ভজন করে,—এই-মাত্র জানে ॥ ১৩৩ ॥
वैष्णवेर निन्द्य-कर्म नाहि पाड़े काणे ।
सबे कृष्ण भजन करे,—एइ-मात्र जाने ॥ १३३ ॥

वैष्णवेर—वैष्णव के; **निन्द्य-कर्म**—निन्दा कर्म; **नाहि पाड़े काणे**—वे सुनते नहीं; **सबे**—सब; **कृष्ण भजन करे**—कृष्ण की सेवा लगा हुआ हो; **एइ-मात्र**—सिर्फ यह; **जाने**—समझते।

अनुवाद

वे न तो वैष्णव की निन्दा सुनते, न ही किसी वैष्णव के दुराचार की बात सुनते। वे केवल इतना ही जानते कि हर कोई कृष्ण की सेवा में लगा हुआ है। इसके अतिरिक्त वे और कुछ नहीं समझते थे।

तात्पर्य

रघुनाथ भट्ट ने कभी ऐसा कोई काम नहीं किया जो किसी वैष्णव को हानिप्रद हो। दूसरे शब्दों में, वे न तो कभी भगवान् की सेवा में असावधान रहे, न ही उन्होंने शुद्ध वैष्णव के विधि-विधानों का कभी उल्लंघन किया। वैष्णव आचार्य का कर्तव्य है कि वह अपने शिष्यों तथा अनुयायियों को वैष्णव आचार के नियमों का उल्लंघन करने से रोके। उसे चाहिए कि वह उन्हें सर्वदा विधि-विधानों का दृढ़ता से पालन करने का उपदेश दे, जिससे वे पतित होने

से बच सकें। यद्यपि वैष्णव प्रचारक कभी-कभी अन्यों की आलोचना कर देता है, किन्तु रघुनाथ भट्ट अपने आपको इससे बचाते रहे। यहाँ तक कि यदि कोई दूसरा वैष्णव दोषी होता, तो भी वे उसकी आलोचना नहीं करते थे। वे केवल इतना ही देखते कि हर कोई कृष्ण-सेवा में लगा हुआ है। *महाभागवत* की ऐसी ही स्थिति होती है। वस्तुत: यदि कोई माया की सेवा करता है, तो उच्च अर्थ में वह भी कृष्ण का सेवक है। क्योंकि माया कृष्ण की दासी है, इसलिए जो भी माया की सेवा करता है, अप्रत्यक्ष रूप से वह कृष्ण की सेवा करता है। इसीलिए कहा गया है :

केह माने, केह ना माने, सब ताँर दास।
ये ना माने, तार हय सेइ पापे नाश॥

"कुछ लोग उन्हें मानते हैं, कुछ नहीं मानते; फिर भी हर कोई उनका दास है। किन्तु जो उन्हें नहीं मानता, वह अपने पापकर्मों से विनष्ट हो जायेगा।" (*चैतन्य चरितामृत, आदि* ६.८५)

महाप्रभुर दत्त माला मननेर काले ।
प्रसाद-कड़ार सह बान्धि लेन गले ॥ १३४॥

महाप्रभुर दत्त माला मननेर काले ।
प्रसाद-कड़ार सह बान्धि लेन गले ॥ १३४॥

महाप्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा; **दत्त**—दी गई; **माला**—तुलसी माला; **मननेर**—स्मरण में; **काले**—उसी समय; **प्रसाद-कड़ार**—भगवान् जगन्नाथ के प्रसाद को निकालते; **सह**—साथ; **बान्धि**—बाँधकर; **लेन**—लेते; **गले**—गले में।

अनुवाद

जब रघुनाथ भट्ट गोस्वामी कृष्ण के स्मरण में मग्न होते, तो वे श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा दी गई तुलसी माला तथा जगन्नाथ जी के प्रसाद को निकालते, उन्हें एक साथ बाँधकर गले में पहन लेते।

महाप्रभुर कृपाय कृष्ण-प्रेम अनर्गल ।
एइ त' कहिलुँ ताते चैतन्य-कृपा-फल ॥ १३५॥

महाप्रभुर कृपाय कृष्ण-प्रेम अनर्गल ।
एइ त' कहिलुँ ताते चैतन्य-कृपा-फल ॥ १३५॥

महाप्रभुर कृपाय—श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से; **कृष्ण-प्रेम अनर्गल**—कृष्ण-प्रेम में विह्वल रहते; **एइ त'**—इस प्रकार; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **ताते**—जिससे; **चैतन्य-कृपा-फल**—श्री चैतन्य महाप्रभु के कृपा का परिणाम।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा का वर्णन किया है, जिससे रघुनाथ भट्ट गोस्वामी निरन्तर कृष्ण-प्रेम में विह्वल रहते थे।

জগদানন্দের কহিলুঁ বৃন্দাবন-গমন ।
তার মধ্যে দেব-দাসীর গান-শ্রবণ ॥ ১৩৬॥
মহাপ্রভুর রঘুনাথে কৃপা-প্রেম-ফল ।
এক-পরিচ্ছেদে তিন কথা কহিলুঁ সকল ॥ ১৩৭॥

জগদানন্দের কহিলুঁ বৃন্দাবন-গমন ।
তার মধ্যে দেব-দাসীর গান-শ্রবণ ॥ ১৩৬॥
মহাপ্রভুর রঘুনাথে কৃপা-প্রেম-ফল ।
এক-পরিচ্ছেদে তিন কথা কহিলুঁ সকল ॥ ১৩৭॥

জগদানন্দের—जगदानन्द पण्डित का; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया; **वृन्दावन-गमन**—वृन्दावन जाना; **तार मध्ये**—उसके साथ ही; **देव-दासीर**—जगन्नाथ मन्दिर में देवदासी का गाना; **गान-श्रवण**—गायन सुनना; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **रघुनाथे**—रघुनाथ भट्ट को; **कृपा**—कृपा; **प्रेम**—प्रेम; **फल**—परिणाम; **एक-परिच्छेदे**—एक अध्याय में; **तिन कथा**—तीन कथा; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन की; **सकल**—सब।

अनुवाद

इस अध्याय में मैंने तीन कथाएँ कही हैं—जगदानन्द पण्डित का वृन्दावन जाना, श्री चैतन्य महाप्रभु का जगन्नाथ मन्दिर में देवदासी का गायन सुनना तथा श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से रघुनाथ भट्ट गोस्वामी द्वारा कृष्ण-प्रेम को प्राप्त करना।

যে এই-সকল কথা শুনে শ্রদ্ধা করি' ।
তাঁরে কৃষ্ণ-প্রেম-ধন দেন গৌরহরি ॥ ১৩৮॥

ग्रे एइ-सकल कथा शुने श्रद्धा करि' ।
ताँरे कृष्ण-प्रेम-धन देन गौरहरि ॥ १३८ ॥

ग्रे—जो कोई; **एइ-सकल**—इन सब; **कथा**—कथाओं को; **शुने**—सुनता है; **श्रद्धा करि'**—श्रद्धा और प्रेम से; **ताँरे**—उनको; **कृष्ण-प्रेम-धन**—कृष्ण-प्रेम रूपी धन; **देन**—देते; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

जो कोई इन कथाओं को श्रद्धा तथा प्रेम से सुनता है, उसको श्री चैतन्य महाप्रभु (गौरहरि) कृष्ण-प्रेम प्रदान करते हैं।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥১৩৯॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्रार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १३९ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों पर; **ग्रार**—जिनकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्यलीला के अन्तर्गत जगदानन्द पण्डित तथा रघुनाथ भट्ट गोस्वामी के साथ लीलाएँ शीर्षक तेरहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।